ओ३म्

शुद्धि आन्दोलन

संकलनकर्त्ता

हरबंसलाल कोहली

प्रकाशक

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा

6949, शुद्धि सभा भवन, बिरला लाईन,

कमला नगर, दिल्ली-110007

प्राप्ति स्थान :
भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा
6949, शुद्धि सभा भवन, बिरला लाईन,
कमला नगर, दिल्ली-110007
दूरभाष : 23847244, 24101067

संकलनकर्ता:
हरबंसलाल कोहली

संस्करण : अप्रैल 2007

मुद्रक :
मयक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करौल बाग, नई दिल्ली-110005
दूरभाष : 41548504, चलभाष : 9810580474

॥ ओ३म् ॥

ओ३म् विश्वानि देव सवितुर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव।

प्राक्कथन

हिन्दू धर्म सत्य पर आधारित है और इसमे सतत् सत्य की खोज है। यह प्रत्येक काल में नूतनता लिये हुए भी सत्य और न्याय की कसौटी पर खरा उतरता है। यह बात ईसाइयत और इस्लाम मे कभी नहीं हो सकती, क्योकि ईसाइयो की मान्यता है कि बाईबल ईश्वरीय पुस्तक है और हजरत ईसा ईश्वर का इकलौता पुत्र है। उधर मुसलमानो की मान्यता है कि कुरान ईश्वरीय पुस्तक है और हजरत मोहम्मद अन्तिम रसूल है। बाईबल और कुरान की कई बाते स्पष्ट न्याय तथा तथ्यो के विरुद्ध दिखाई देती है, जिससे उनके प्रबुद्ध अनुयायियो के मनो मे भी सन्देह होना स्वाभाविक है। हिन्दुओ के सभी मतों के धर्माचार्य समय-समय पर गोष्ठियो मे तर्क का सहारा लेते हुए सौहार्दपूर्ण वातावरण मे सत्य के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान कराते रहे। छुआछूत, जो जघन्य पाप है, के अभिशाप से यदि हम हिन्दू मुक्त हो जाये, और प्रत्येक हिन्दू परावर्तन मे रुचि लेने लग जाये, तो भारत मे ईसाई और मुसलमान, जिनके क्रमश: अठानबे प्रतिशत पूर्वज कभी हिन्दू थे और जो भय या लोभ के कारण अथवा हम हिन्दुओ मे जाति-भेद और किसी अन्य परिस्थितिवश हमे छोड गये थे, पुन: हिन्दू धर्म मे लौट सकते हैं।

परावर्तन केवल प्यार से अपने सद्व्यवहार से समझा-बुझाकर हिन्दू सस्कृति और राष्ट्रीय भावनाओ को जागृत करके किया जा सकता है। घृणा का इसमे कोई स्थान नहीं है।

हरबंस लाल कोहली

अनुक्रम

			पृष्ठ सख्या
1	प्राक्कथन		3
2	शुभकामना मन्देश		5-15
3	अथ शुद्धि मस्कार पद्धति प्रारम्भ	— *मकलन बनवारीलाल*	16
4	भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का परिचय	— *हरबमलाल कोहली*	17
5	भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का गौरवान्वित इतिहास		19
6	महर्षि दयानन्द, आर्य समाज और शुद्धि	— *हरबमलाल कोहली*	20
7	अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द	— *कैप्टन देवरत्न आर्य*	22
8	श्रद्धानन्द शूर अलबेला	— *प्रो राजेन्द्र 'जिज्ञासु'*	23
9	स्वामी श्रद्धानन्द	— *प महेन्द्र पाल आर्य*	24
10	धर्मवीर प लेखराम	— *हरबसलाल कोहली*	26
11	हिन्दुत्व की वीर भुजा	— *रामधारी सिह दिनकर*	28
12	शुद्धि	— *प गगाप्रसाद उपाध्याय*	29
13	महात्मा हमराज की बहुमुखी आभा	— *पद्मश्री ज्ञान प्रकाश चोपडा*	32
14	शुद्धि आन्दोलन मे महात्मा हसराज	— *डॉ योगेश्वर देव*	33
15	शुद्धि का सुदर्शन चक्र	— *मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति*	37
16	बिछुडे हुओ का मिलाप	— *स्व महाशय बिहारीलाल जी*	39
17	हिन्दू भाइयो जरा सोचिये		41
18	वेदिक धर्म ही क्यो	— *सुरेन्द्र कुमार गुप्त*	43
19	वीर सावरकर को शुद्धि कार्य पसन्द था	— *इन्द्र देव गुलाटी*	44
20	सच्ची शान्ति की ओर	— *ओमप्रकाश सपरा*	45
21	एक मार्ग दर्शन		46
22	On The Bible	— *आर्यसमाज देहरादून*	47
23	चाहिए ऐसा भारतवर्ष	— *विनोद कुमार पाण्डेय*	47
24	कविताए	— *हरबमलाल कोहली*	48 51
25	मावरकर—जन-जागरण का त्रिविध आह्वान	— *डॉ एस एन नवलगुदकर*	52
26	धर्मान्तरण का इतिहास तथा जाति प्रथा	— *विनायक दामोदर सावरकर*	56
27	भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के अधिकारी एव अतरग मदस्य—वर्ष 2006		64
28	भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के कर्मचारी		64

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

वेद-मन्दिर
ग्राम-इब्राहिमपुर, दिल्ली-36

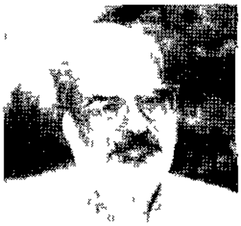

सन्देश।

यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि आप 'भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा' के अन्तर्गत एक पुस्तक ''शुद्धि-आन्दोलन'' प्रकाशित कर रहे है। इस अत्युत्तम कार्य के लिए आपको साधुवाद और बधाई देता हू।

आज देश बारूद के ढेर पर बैठा है। मुसलमानो के तुष्टिकरण के लिए सविधान का उल्लघन करके उन्हे सुविधाए दी जा रही है। ईसाई मिशनरी हिन्दुओ को ईसाई बनाने मे प्राणपन से जुटे हुए है। मुसलमान अपनी सख्या वृद्धि मे लगे हुए है। जैन-बौद्ध और सिखो ने अपने आपको हिन्दु कहने से इनकार कर दिया है। पाकिस्तान कश्मीर को हडपने की तैयारी मे लगा है। चीन हमारी भूमि को दबाता हुआ दनदना रहा है। बगाली घुस-पैठियो की समस्या विकराल मुहबाये खड़ी है, उधर आतकवाद पैर पसार रहा है। ईसाई और मुसलमानो की सख्या जिस तेजी से बढ़ रही है, यदि यही गति चलती रही, तो सन् 2050 तक हिन्दू अल्प सख्या मे आ जाएगा। फिर हिन्दुओ का बचना कठिन होगा। ईसाइ और मुसलमानो को प्रसन्न करने के लिए हिन्दुओ को दबाया, सताया और कुचला जा रहा है।

इस सबका इलाज क्या है? उत्तर है—स्वामी श्रद्धानन्दजी का चलाया हुआ शुद्धि आन्दोलन। हिन्दुओ को बचाना है, तो शुद्धि चक्र चलाओ। ईसाई और मुसलमानो को शुद्ध करके वैदिक धर्म मे दीक्षित करो। **नान्या पन्था विद्यतेऽयनाय** और कोई मार्ग नही है।

आप जो प्रयास कर रहे है, वह अभिनन्दनीय है। बढ़े चलो। सफलता मिलेगी और प्रभु का आशीर्वाद भी प्राप्त होगा।

स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती

रामनाथ सहगल

प्रधान
भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा

सन्देश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की ओर से एक पुस्तक 'शुद्धि आन्दोलन' के नाम से प्रकाशित कर रहे है। मै इस पुस्तक के सफल प्रकाशन के लिए अपनी ओर से, अपने परिवार की ओर से एव भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की ओर से हार्दिक शुभकामनाए प्रेषित करता हू।

यह पुस्तिका आर्यजनो के लिए काफी प्रेरक एव उत्साहवर्धक सिद्ध होगी और उन्हे भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की गतिविधियो की जानकारी हो सकेगी। मैं परमपिता से प्रार्थना करता हू कि शुद्धि कार्य दिन प्रतिदिन प्रगति की ओर अग्रसर हो, मेरी शुभकामनाए सर्वदा शुद्धि सभा के साथ है।

रामनाथ सहगल

पद्मश्री ज्ञान प्रकाश चोपड़ा

प्रधान
डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्तृ समिति
एवं
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

सन्देश।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा पहली बार शुद्धि पर एक पुस्तक प्रकाशित कर रही है। शुद्धि का कार्य महर्षि दयानन्द जी ने हिन्दुओ से निकले ईसाइयो व मुसलमानो को वापस हिन्दू धर्म मे लाने के लिए प्रारम्भ किया था और इस कार्य को स्वामी श्रद्धानन्द जी ने महात्मा हसराज जी और प मदन मोहन मालवीय जी के साथ मिलकर आन्दोलन का रूप दिया।

मुझे आशा है कि इस पुस्तक के माध्यम से शुद्धि सभा के कार्य मे और प्रगति होगी तथा आर्य समाज का नाम भी ऊचा होगा।

ज्ञान प्रकाश चोपड़ा

ब्र० राजसिंह आर्य

प्रधान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

सन्देश

जानकर अत्यन्त हर्ष हुआ कि आप भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के कार्यक्रमो एव किये गये कार्यो की एक पुस्तिका का प्रकाशन कर रहे है। मै आपके इस प्रकाशन के लिए आपको कोटिश: बधाई एव धन्यवाद देता हू।

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने सर्वप्रथम शुद्धि आन्दोलन प्रारम्भ किया था, जो उस समय की महान् आवश्यकता थी। यदि स्वामी इस आन्दोलन को सचालित नही करते, तो आज हिन्दू जाति समाप्त हो गयी होती। स्वामी श्रद्धानन्द जी के इसी शुद्धि कार्य को भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा शुद्धि कार्य को निरन्तर आगे बढा रही है और एक मिशन के रूप मे इस कार्ययोजना को चला रही है।

आपकी सस्था द्वारा भारत के सूदूर वनवासी क्षेत्रो तथा पिछडे क्षेत्रों मे जाकर इस प्रकार के कार्य करना हमे एक प्रेरणा एव साहस प्रदान करते हैं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा आप द्वारा किये गये कार्यो मे पूर्णत: सहभागी है। हमारा सहयोग तन-मन-धन से पूर्णत. आपके शुद्धि कार्य के लिए मिलता रहेगा। आशा है कि आप द्वारा किये जा रहे शुद्धि कार्य से हम हिन्दू जाति को बचा पाने मे सक्षम हो पायेगे।

पुन: स्मारिका प्रकाशन के लिए आपको बधाई एव हार्दिक धन्यवाद।

ब्र० राजसिंह आर्य

माता प्रेम लता शास्त्री

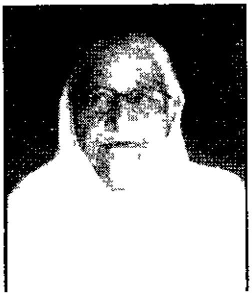

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ (रजि०)

सन्देश

मुझे यह जानकर अति प्रसन्नता हुई है कि भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की ओर से एक पुस्तिका प्रकाशित कर रहे है। शुद्धि सभा गत आठ दशकों से शुद्धि का कार्य कर रहा है। आपके नेतृत्व में शुद्धि का कार्य प्रगति पर है।

मेरी शुभकामना है कि इस पत्रिका से आपके इस शुभ कार्य मे और उन्नति हो।

पुस्तक के सफल प्रकाशन हेतु शुभ कामनाए है।

प्रेम लता शास्त्री

बनारसी सिंह

पूर्व समाचार सम्पादक
यूनीवार्ता एवं दैनिक वीर अर्जुन

सन्देश

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा सस्थापित भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की भारत के इतिहास मे एक महती भूमिका रही है। हिन्दू समाज मे काल प्रवाह के वशीभूत छूआछूत के जिस विष वृक्ष का उदय हुआ उसने भारत की वेद प्रणीत सामाजिक व्यवस्था को प्रबल आघात लगाया था। इस विकृत सोच के चलते समाज का विश्रृखलन तो हुआ ही साथ ही उसके अविभाज्य अग उन कोटि कोटि जन को अपनो से भी उपेक्षा का दश झेलना पड रहा था। उनकी इस दुखस्थ ने ही उन शक्तियो को इन दलितजन को अपने–मतान्तरण अभियान का लक्ष्य बनाकर उन्हे मतान्तरित कर हिन्दू (आर्य) समाज से पृथक् करने के अभियान को प्रबल किया था।

स्वामी श्रद्धानन्द ने समाज को मिल रही इस टीस को गहनता से अनुभूत करते हुए इस अभियान के गतिमान होने के दुष्परिणामो के विरुद्ध सचेत तो किया ही, साथ ही समाज से बिछडे लाखो बन्धुओ को पुन गले लगाने का अपना सपना व्यवहार मे उतारा था और हिन्दू सगठन को ही इस सकट पर पार पाने के लिए अमृत सुधा बनाया था।

उनके द्वारा सस्थापित हिन्दू शुद्धि सभा ने अपनी स्थापना के बाद से अब तक अपने अथक प्रयास से हुतात्मा श्रद्धानन्द के उस युगान्तरकारी अभियान को अभावो और अवरोधो को सहते हुए भी सतत गतिमान रखा है। यह ऐतिहासिक योगदान प्रशसनीय ही नहीं, अनुकरणीय भी है। समाज को स्वस्थ और सुदृढ रूप प्रदान कर देने के लिए प्रत्येक राष्ट्रभक्त का हिन्दू शुद्धि सभा को यथाशक्ति सहयोग पावन कर्तव्य है। सभा के वर्तमान पदाधिकारी स्वामी श्रद्धानन्द के अपूर्ण सपने की पूर्ति मे पूर्ण निष्ठा सहित सलग्न हे, यह जानकर राष्ट्र की एकता और अखण्डता के सभी पक्षधरो को सन्तोष की अनुभूति होगी।

''शुद्धि आन्दोलन'' के सफल प्रकाशन के लिए मेरी शुभ कामनाएँ।

–बनारसी सिंह

राजीव भाटिया

महामन्त्री
भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा

सन्देश

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि कई वर्षो के पश्चात् भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की ओर से एक पुस्तक **शुद्धि आन्दोलन** का प्रकाशन किया जा रहा है। मैं इस पुस्तिका के सफल प्रकाशन के लिए अपनी ओर से एवं भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की ओर से हार्दिक शुभकामनायें प्रेषित करता हूं।

यह पुस्तिका सभी आर्य महानुभावो के लिए भी काफी प्रेरक, उत्साहवर्धक सिद्ध होगी, और उन्हे भी भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की गतिविधियों की जानकारी एव शुद्धि कार्य की महत्ता को जानने का अवसर मिलेगा।

इसके लिए मेरी शुभकामनायें।

राजीव भाटिया

इन्द्रदेव गुलाटी

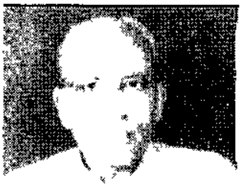

संस्थापक
सावरकर विचार मंच

सन्देश

यह जानकर अति प्रसन्नता हुई कि सभा की ओर से पहली बार एक पुस्तिका प्रकाशित की जा रही है। यह बहुत अच्छा सुझाव था, जिसे पूरा किया जा रहा है। मैं सफलता की कामना करता हू।

यदि इस पुस्तिका मे, कुछ ऐसे लोगो के बारे मे जानकारी भी दी जाये, तो बहुत अच्छा होगा, जो कई वर्षो पूर्व, हिन्दू धर्म मे वापस आये थे या हिन्दू धर्म की श्रेष्ठता को जानकर आपना मूल धर्म छोडकर, हिन्दू धर्मावलम्बी पहली बार बने थे। ऐसे लोगो की सफल जीवनी को पढकर अन्य लोग इधर आने को तैयार हो सकते है, जो रोटी/बेटी के कारण इधर आने मे सकोच कर रहे है।

म हिन्दू धर्म मे वापस आये हुए सभी लोगो के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हू।

इन्द्रदेव गुलाटी

अशोक सहगल

प्रधान
आर्य समाज, राजेन्द्र नगर

सन्देश।

मुझे यह जानकर अपार हर्ष हुआ कि आधुनिक भारत के नवनिर्माता महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त तथा सहयोगी श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा सस्थापित भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा एक स्मारिका प्रकाशित करने जा रही है। विगत वर्षो मे इस सभा ने साम्प्रदायिक शक्तियो द्वारा धर्मान्तरित अनेक भाई/बहिनो को पुन: आर्य वैदिक धर्म से जोड़ने का सराहनीय एव ऐतिहासिक कार्य सम्पन्न किया है। इसके लिए आप सब लोग साधुवाद के पात्र हैं।

मुझे आशा है कि इस स्मारिका के प्रकाशन से शुद्धि सभा के आन्दोलन को और अधिक सम्बल प्राप्त होता। इस ऐतिहासिक कार्य को सुचारु रूप से सम्पन्न करने के लिए परमात्मा आप सबको और अधिक सामर्थ्यवान् बनाये। यही मेरी प्रार्थना है।

अशोक सहगल

धर्मानन्द सरस्वती

गुरुकुल आश्रम आमसेना
उड़ीसा

सन्देश

आप शुद्धि सभा को पुनः सक्रिय करने का यत्न कर रहे है। इसके लिए कुछ साहित्य प्रकाशन करने की योजना है। यह जानकर बहुत प्रसन्नता हुई। आज धर्मरक्षा महाभियान चलाने की आवश्यकता पहले की अपेक्षा अधिक है। पहले तो विदेशी ही हमारे विरोधी थे, अब तो हमारी सरकार भी तुष्टिकरण के नाम पर उन्हीं विदेशी मतों को प्रश्रय दे रही है। हमारे देश के कई प्रान्तो मे धर्मान्तरित ईसाई बन्धु ही आर्य (हिन्दू) को ही विदेशी घोषित कर रहे है। नागालैण्ड जैसे कई प्रान्तो मे इस देश का निवासी बिना परमिट के जा नहीं सकता। अब तो झारखण्ड, छत्तीसगढ, उडीसा में भी ईसाई पादरी दुगुने वेग से लगे हुए हैं। वे ऐसे दुर्गम स्थानो मे भी पहुच गये हैं, जहा हमारे देश का वासी भी जाने की नही सोच सकता।

दुर्भाग्यवश हम आर्य (हिन्दू) ने ही पुनर्मिलन कार्य के प्रति बहुत उपेक्षाभाव बना ली है। आपकी तरह से हम भी अपने बिछुडे भाइयो को लाने के लिए प्रयत्नशील हैं। ऐसे बीहड जगलो मे भी पहुचने का यत्न कर रहे हैं, जहा नक्सलियो का भय भी छाया रहता है। फिर भी यदि हमारे कार्यकर्ता एव अधिकारियो मे कुछ तडप हो तथा साधन जुटाये, तो हम इन विदेशी मिशनरियो का मुकाबला कर सकते है तथा करना चाहिए। अब आप इस कार्य के लिए उत्साहपूर्वक लगे हुए है, इसके लिए मेरी हार्दिक बधाई एव शुभकामनाए स्वीकार करे।

धर्मानन्द सरस्वती

विजय गुप्त

आशु कवि
दिल्ली

स्वामी श्रद्धानन्द

श्रद्धा जीवन का आराध्य है
श्रद्धा सुमन मे भरी सुगन्ध
श्रद्धा के यज्ञ समर्पण मे,
समिधा बन गये श्रद्धानन्द।

सत्य का आधार मिला, सद्‌चिन्तन का व्यवहार मिला,
सत्कर्मो का सस्कार मिला, इतिहास को नया आकार मिला,
श्रद्धावान् बनकर मिटाए जीवन के समस्त द्वन्द्व,
श्रद्धा के यज्ञ समर्पण मे, समिधा बन गये श्रद्धानन्द।

अन्धकार मे भटके समुदाय, अपने भी जब लगे पराये,
परतन्त्रता का दश सताए, सूझे न जब कोई उपाये,
शुद्धि के पावन मन्त्र से, युग-युग के खोले बन्द,
श्रद्धा के यज्ञ समर्पण मे, समिधा बन गये श्रद्धानन्द।

सद्ज्ञान का दीप जलाया, गुरुकुलो का भाग्य जगाया,
विकास-सस्कृति का पथ सजाया, बिछुडो को तब गले लगाया,
हर कली-पुष्प नवचिन्तन की प्रस्फुटित हुई सुगन्ध,
श्रद्धा के यज्ञ समर्पण मे, समिधा बन गये स्वामी श्रद्धानन्द।

दयानन्द के तुम अनुयायी, धर्म के तुम प्रखर सिपाही,
सत्य पथ के अडिग राही, तीन गोलिया सीने पर खायी।
भूत-वर्तमान-भविष्य से श्रद्धा का जुडा सम्बन्ध,
श्रद्धा के यज्ञ समर्पण मे, समिधा बन गये श्रद्धानन्द।

विजय गुप्त

अथ शुद्धि-संस्कार पद्धति

ओं उत देवा अवहित देवा उन्नयथा पुनः।
उतागश्चक्रुष देवा देवा जीवयथा पुनः॥ ऋ० १०।१३७।१।
ओं दैव्याय कर्मणे शुन्धध्व देवयज्यायै। य० १।१३॥

भावार्थ—हे विद्वानो! जो मनुष्य सत्य धर्म से गिर गये हैं, उनको पुन. उठाओ और जिन्होंने पापकृत्य किया है अथवा जिनका जीवन अपवित्र हो गया है, उनको फिर से शुद्ध करके पवित्र जीवन दो। हे मनुष्यो! तुम पतितो को देव कर्मा मे प्रवृत्त करने के लिए शुद्ध करो।

''शुद्धि''उसे कहते हैं कि जिन पुरातन आर्य-हिन्दुओ में किसी भी समय भय और धोखे से तथा जर (धन) जन से प्रतीकार न किया जाये, जो रोग और शत्रु बढकर बडे भयानक हो जाते हैं, यह सर्वसम्मत बात है।

आर्य (हिन्दू) जाति उपर्युक्त कई प्रकार के रोगो से चिरकाल से आक्रान्त है। बाल विवाहादि दुष्कर्मो से इसकी शारीरिक निर्बलता बढी है। बाल विवाहादि ऐसे कृत्य हैं, जो हिन्दू जाति के अज्ञान की दुन्दुभि बजा रहे हैं। अज्ञान का मानसिक रोग, प्रमाद, आलस्य, उपेक्षादि महान् रोगों की जड है, हिन्दू जाति इस घोर आक्रमण से तितर-बितर हो गयी है, चिरकाल से इस महारोग मे ग्रस्त होकर डकरा रही है। ''दैवो दुर्बल घातक:'' दुर्बल का दैव भी सहायक नहीं होता। ''दुर्बलता मे दुष्ट लोग दबाया करते हैं'' इसी नीति के अनुसार हिन्दू जाति का चिरकाल से अध:पतन हो रहा है, ठोकरों पर ठोकरे लग रही हैं, परन्तु इतनी दुर्दशा होने पर भी अज्ञानावस्था में पडी-पडी खुर्राटे ले रही है। परमात्मा की अपार दया से **शास्त्रज्ञान** का अमृतघट लेकर एक सद्वैद्य उपस्थित हुआ, उसने हिन्दू जाति की नाडी की परीक्षा करके रोग का निदान किया और प्रयोग निर्धारित किया। रोगी को दुर्बल देखकर विधर्मी लोग लूट मचाते थे, रुग्ण भारत के बालक और देवियो का खुले मैदान अपहरण होता था, दानवो का सोल्लास ताण्डवनृत्य हो रहा था, रात अन्धेरी थी, रोगी को कोई उपचारक भी न था—बडी विकट समस्या थी, ऐसे दु:समय में धैर्यपूर्वक चिकित्सा करना बडा कठिन काम था, परन्तु दयावशवद होकर आनन्द के साथ प्रयोग निश्चय कर दी हिया। नुसखा सचमुच ''रसायन'' निकला, इस नुसखे मे अनेक वस्तुओ का मेल था—यथा—

(1) बाल विवाह का काला मुह, मात्रा 16 (2) सम्प्रदाय भेद और जाति भेद को तिलाजलि, मात्रा 16 (3) अछूतोद्धार मात्रा 16 (4) हिन्दू सगठन, मात्रा 16 (5) बाल विधवाओ का पुनर्लग्न, मात्रा 16 (6) वेदरक्षा और ईश्वर भक्ति, मात्रा 16 (7) गोसेवा, गोरक्षा, गोवधबन्द, मात्रा 16 (8) परस्पर सहानुभूति और प्रेम, मात्रा 16 इत्यादि कितने ही प्रधान अग इस क्षयरोगहारी नुसखे मे मौजूद थे, परन्तु इन सबसे तिगुनी मात्रा पतितपावनी 'शुद्धि' की थी।

संकलन-बनवारीलाल

अध्याय-1

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का परिचय

—हरबंसलाल कोहली

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मुख्य कार्यालय 6949 बिरला लाइन्स, कमला नगर, दिल्ली-110007 मे स्थित है। इस कार्यालय मे स्वामी श्रद्धानन्द, पडित मदन मोहन मालवीय तथा सेठ जुगल किशोर बिडला के चित्र भी लगे हुए है। कार्यालय मे दूरभाष का भी प्रबन्ध है।

इस समय सभा के पास ग्यारह प्रचारक है, जिनमे से एक महिला है। यह उत्तर प्रदेश मे हिन्दुओ से निकले ईसाइयो को वापस लाने का काम करते है। एक प्रचारक का खर्च आर्यसमाज आर्यनगर, पहाडगंज वहन करता है। नये प्रचारक रखने के लिए एक स्थिर निधि भी बनायी जा रही है, जिसके ब्याज से नये प्रचारक रखे जायेगे। शुद्धि सभा की योजना है कि शीघ्र-से-शीघ्र प्रचारको की गिनती 15 हो जाये। इसमे आर्य जनता का जितना सहयोग होगा, उतना कार्य बढेगा।

शुद्धि सभा की ओर से प्रयत्न किया जाता है कि पूरा का पूरा गाव शुद्ध हो, जिससे भविष्य मे शादी-ब्याह की समस्या उत्पन्न न हो। शुद्धि के बाद पुरस्कार रूप मे बर्तन, साडिया, कम्बल आदि दिये जाते है। ऋषि लगर का प्रबन्ध भी होता है, आर्य साहित्य भी बाटा जात है। शुद्धि होने वाले मुखियाओं को हवन कुण्ड और सात्यार्थप्रकाश की प्रतिया भी दी जाती है। शुद्ध होने वाले सकल्प भी लेते है कि वह अपनी इच्छा से वैदिक धर्म मे आये है और अब कभी धर्म परिवर्तन नहीं करेगे।

शुद्धि सभा का मासिक पत्र शुद्धि समाचार है। इसकी सरकुलेशन पिछले तीन वर्ष मे 500 से बढकर 1800 हो गयी है।

शुद्धि सभा की एक-एक शाखा बरेली और बुलन्दशहर मे खुल चुकी है, और दो और स्थानो पर निकट भविष्य मे खुल जायेगी।

स्थापना तथा उद्देश्य

श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज तथा महात्मा हसराज आदि आर्य नेताओ ने निम्नलिखित उद्देश्य की पूर्ति के लिए सन् 1923 मे इस सभा की स्थापना की और सन् 1925 मे भारतीय सोसाइटीज एक्ट के अन्तर्गत इसकी रजिस्टरी कराई

उद्देश्य

(क) हिन्दू समाज के पिछडे हुए तथा अन्य मतावलम्बियो को पुनः हिन्दू समाज मे सम्मिलित करना तथा उन्हे अन्य अवैदिक मतो को ग्रहण करने से रोकना।

(ख) वैदिक धर्म का प्रचार करना।

(ग) अनाथ तथा विधवाओ के धर्म की रक्षा करना।

(घ) आवश्यकतानुसार शुद्धि क्षेत्र मे चिकित्सालय तथा विद्यालय खोलना।

(ङ) धार्मिक, ऐतिहासिक तथा अन्य पुस्तको का, जो सभा के उद्देश्य की पूर्ति मे सहायक हो, छपवाकर विक्रय तथा वितरण करना।

शुद्धि आन्दोलन

सन् 1909 मे आगरा के पडित भोजदत्त ने 'राजपूत शुद्धि सभा' की स्थापना की। एक हजार के लगभग मुसलमान बने राजपूतो को शुद्ध किया गया। पर अन्य राजपूतो ने उन्हे अपनी बिरादरी मे स्वीकार नही किया। सन् 1922 मे क्षत्रिय उपकारिणी सभा ने राजपूतो से अनुरोध किया कि शुद्ध हुए राजपूतो को बिरादरी मे शामिल किया जाये। इस पर मुसलमान मौलवियो ने बडा हो-हल्ला मचाया। तब 13 फरवरी 1923 को 'भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा' की स्थापना की गयी, जिसके प्रधान स्वामी श्रद्धानन्द जी थे। इस सभा द्वारा 1931 तक 1,83,242 नव-मुस्लिमो को शुद्ध करके हिन्दू समाज मे मिलाया गया। 'शुद्धि समाचार' नामक एक पत्र का प्रकाशन भी शुरू किया गया।

पुनरुत्थान

तपश्चर्या का फल जरूर होता है चाहे कुछ काल बाद ही हो, उसकी अवश्यभाविता मे सन्देह नही। महानुभाव के तप का फल कुछ काल बाद यह हुआ कि ''राजपूत क्षत्रिय महासभा, आगरा'' के महाधिवेशन मे 'शुद्धि' का प्रयोग मे लाना सर्वसम्मति से पास हो गया। ''मलकाने'' राजपूतो के भाग जागे—''मलकाने'' राजपूत, पुराने समय मे जाति बहिष्कृत होकर कुछ-कुछ मुसलमानी व्यवहार करने लग गये थे, इन लोगो की धडाधड शुद्धिया सहस्रो की सख्या मे हुई और वृन्दावन मे सुप्रसिद्ध क्षत्रिय महानुभावो के साथ मलकाने क्षत्रियो का सहभोज या प्रीतिभोज हुआ, जिसमे राजाधिराज सरनाहरसिह जी वर्मा के सी आई ई शाहपुराधीश, सर राजा रामपालसिह जी, के सी आई ई कुर्री सदौली नरेश, राजा गोपाल राव साहब—खरवा नरेश प्रभृति महानुभाव सम्मिलित हुए।

❑❑

अध्याय-2

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का गौरवान्वित इतिहास

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना स्वामी श्रद्धानन्द जी, पं मदन मोहन मालवीय जी तथा महात्मा हंसराज जी ने 1923 मे आगरा (उ प्र) मे की थी। इसको आज 83 वर्ष हो चुके हैं। भारत स्वतन्त्र होने के पश्चात् यहां हिन्दू राज्य तो स्थापित नही हो सका और इस्लाम तथा ईसाईयत की गतिविधिया धीरे-धीरे बढने लगी है। इस सदर्भ मे कई लोग हम से पूछते है कि भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का कोई इतिहास भी है या नही। इस बारे मे जो भी रिकार्ड हमारे पास उपलब्ध हैं उसमे आया है कि शुद्धि सभा के पूर्व अधिकरी कितने महान पुरुष रहे है, जिन्होने प लेखराम जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी और महाशय राजपाल जी की शहादत के पश्चात् भी शुद्धि की ज्योति को जलाये रखने का प्रयत्न किया। उनकी स्मृतियो को ताजा रखने के लिए उनमे से कुछ महान व्यक्तियों के नामो का उल्लेख किया गया है, जो भारतीय हिन्दृ शुद्धि सभा के अधिकारी रहे है।

1 श्री हिज हाइनेश शाहपुराधीस

2 सेठ जुगलकिशोर जी बिरला

3 स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज (दयानन्द मठ दीनानगर) पंजाब

4 बाबा मिलखा सिंह, नई दिल्ली

5 श्री नारायण दत्त ठेकेदार, दिल्ली

6 महाशय कृष्णजी (प्रताप अखबार वाले)

7 महाशय खुशहाल चन्द खुरसन्द (महात्मा आनन्द स्वामी) (मिलाप अखबार वाले)

8 ला हसराज गुप्ता, महापौर, दिल्ली

9 चौ देशराज, महापौर, दिल्ली

10 सर गोकलचन्द नारग, मन्त्री, (पजाब सरकार, लाहौर वाले)

11 श्री विनायक दामोदर वीर सावरकर, अध्यक्ष, अखिल भारतीय हिन्दू महासभा

12 भाई परमानन्द जी, लाहौर वाले

13 डा श्यामा प्रसाद मुखर्जी, अध्यक्ष, अखिल भारतीय हिन्दू महासभा

14 पं रामचन्द्र देहलवी, शास्त्रार्थ महारथी

15 प्रो रामसिंह, अध्यक्ष, अखिल भारतीय हिन्दू महासभा, दिल्ली

16 श्री ओमप्रकाश त्यागी, ससद सदस्य

17 श्री पृथ्वी राज शास्त्री जी, नई दिल्ली

18 श्री द्वारका नाथ सहगल जी, नई दिल्ली

अध्याय-3

महर्षि दयानन्द, आर्य समाज और शुद्धि

—हरबसलाल कोहली

शुद्धि

ऋषि दयानन्द से पहले हिन्दुओ ने विधर्मी बन गये लोगो के लिए शुद्ध होकर पुन: वेदिक धर्म मे आने का मार्ग बन्द कर रखा था। ऋषि दयानन्द ने इस द्वार को खोल दिया। लोग शुद्ध होकर वैदिक धर्म मे आने लगे। यह अहिन्दुओ के हृदयो के लिए भारी आघात था। वे सारे भारत से शिखा-सूत्र मिटा देने के सपने देख रहे थे। मुसलमानो का क्रोध इसलिए था कि जिस जाति को वे अपना ग्रास समझते थे, वह अब उनका ग्रास बनना पसन्द नही कर रही। समझदार मुसलमान अब यह मानने लगे है कि जैसे मुसलमानो को तबलीग (हिन्दुओ को मुसलमान बनाने) का अधिकार है, वैसे ही हिन्दुओ को भी शुद्धि का अधिकार है।

बलिदान

शुद्धि के महान् और विस्तृत कार्य को देखकर कुछ मुसलमानो ने सीधा मार्ग ग्रहण करने के स्थान पर आर्यो और हिन्दुओ को भयभीत करने के लिए उस मार्ग का अवलम्बन किया।

शुद्धि का कार्य बन्द करने के लिए पडित लेखराम के प्राण लिये गये। महर्षि दयानन्द जी द्वारा देहरादून मे एक मुसलमान को अपने कर कमलो से शुद्ध करने का वर्णन है, जिसका नाम था—मोहम्मद उमर वल्द ख्वाजा हुसैन। उसे शुद्ध करके स्वामी जी ने अलखधारी नाम दिया, तो बाद मे आर्यसमाज का एक अत्यन्त उत्साही कार्यकर्ता बना और उसने वैदिक धर्म के प्रचार के लिए अपनी समस्त शक्ति लगा दी।

ब्राह्मणो के अतिरिक्त अन्य सभी वर्णो के लोग हमारे यहा मनुष्य ही नहीं समझे जाते थे। महर्षि जी ने उन्हे सुझाया कि तुम भी पुरुष हो, तुममे ईश्वर का जो प्रकाश है, वह किसी ब्राह्मण से कुछ कम नही है। यह चेतावनी काम कर गयी और जडता-ग्रस्त समाज मे प्राण की सजीवनी सचारित होने लगी।

हिन्दू धर्म मे ससार के अन्यान्य धर्मो मे से एक यह आत्मनाशी विशेषता थी कि जो व्यक्ति जन्म से ही हिन्दू नही होता था, वह किसी काल मे भी हिन्दू नही हो सकता था। अन्य धर्मो के प्रवर्तको ने विभिन्न मातवलम्बियो को अपने धर्म मे दीक्षित करने का सतत प्रयत्न किया है, और अपने मतानुयायियो की संख्या बढायी है। कोई व्यक्ति किसी भी धर्म या मत का माननेवाला हो, वह उक्त धर्म प्रवर्तको मे से किसी का भी पन्थ ग्रहण करने को स्वतन्त्र है। मुसलमान नेता हिन्दू अथवा ईसाइयो को मुसलमान बना सकते है ईसाई पादरी किसी हिन्दू अथवा मुसलमान को अपने धर्म मे ले

सकते है, पर स्वामी दयानन्द के समय से पहले कोई भी हिन्दू कभी किसी विधर्मी को अपने धर्म मे लेने का साहस या इच्छा नही करता था। जन्म से ही कोई व्यक्ति हिन्दू कहलाने के योग्य होता था, शुद्धि से नहीं। यह प्रवृत्ति घोर आत्मघाती थी। महाभारत के युग तक हिन्दूधर्म मे अनेक विधर्मी दीक्षित हुए, सन्देह नहीं पर इसके बाद 'म्लेच्छो' के विरुद्ध अपनी 'रक्षा' करने के लिए एक जबरदस्त चाहरदीवारी हम लोगो ने खडी कर दी थी। स्वामी जी ने देखा कि इससे जाति अत्यन्त दुर्बल पडती जाती है। उन्होने शुद्धि पर जोर दिया। उनकी मृत्यु के बाद अनेक राजपूत मुसलमान हिन्दू धर्म मे पुन दीक्षित किये गये और इससे हमारी जाति मे कितना बल आ गया है। स्वामी श्रद्धानन्द को इस महत उद्देश्य के कारण शहीद होना पडा।

आर्य समाज ने शुद्धि ओर सगठन का भी प्रचार किया। सन् 1929 ई० मे मोपला (मालाबार) मे मुसलमानो ने भयानक विद्रोह किया और उन्होने पडोस के हिन्दुओ को जबरदस्ती मुसलमान बना लिया। आर्यसमाज ने इस विपत्ति के समय छाती खोली और कोई ढाई हजार भ्रष्ट परिवारो को फिर से हिन्दू बना लिया। इसी काण्ड के बाद आर्यसमाजियो ने राजस्थान के मलकाना-राजपूतो की शुद्धि आरम्भ की। जब अन्य धर्म वालो को यह अधिकार है कि वे चाहे जितने हिन्दुओ को क्रिस्तान या मुसलमान बना सकते है, तब धर्म-भ्रष्ट हिन्दुओ को फिर से हिन्दू बना लेने मे क्या अन्याय है?

ईसाइयत और इस्लाम के आक्रमणो से हिन्दुत्व की रक्षा करने मे जितनी मुसीबते आर्यसमाज ने झेली है, उतनी किसी और सस्था ने नही। सच पूछिये तो उत्तर भारत मे हिन्दुओ को जगाकर उन्हे प्रगतिशील करने का सारा श्रेय आर्यसमाज को ही जाता है।

प्रसिद्ध इतिहासकार प्रो हरिदत्त वेदालकार लिखते है—"पिछली सदी के किसी अन्य समाज सुधारक को इस बात की कल्पना भी नही हुई कि वह विधर्मियो को हिन्दू समाज मे मिलाने की व्यवस्था करे। ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज को ही इस बात का श्रेय है कि इस व्यवस्था से उन्होने हिन्दू जाति को सबल और क्रियाशील बनाया।"

❑❑

शुद्धि समारोह की विद्धि अनुकूल परिस्थिति के होने पर ही की जानी चाहिए। परन्तु जहा पर स्थिति अनुकूल न हो और देश-काल भी प्रतिकूल हो, तो वहा बाह्य व्यापार को शिथिल करके गायत्री मन्त्र से या गगास्नान से या ओकार ध्वनि प्रकाशक शख ध्वनि से अथवा 'ओ३म्' ऐसा कहलाने मात्र से या आचमन कराने मात्र से शुद्धि कर देनी चाहिए। क्योकि—

आपत्कालेतु सम्प्राप्त शौचाचारं न चिन्तयेत्।
शुद्धि समुद्धरेत्पश्चात् स्वस्थोधर्म समाचरेत्॥

पाराशर स्मृति ७-४३

अध्याय-4

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द

—कै देवरत्न आर्य

गुरुकुल की स्थापना : स्वामी जी चाहते थे कि कुछ ऐसी शिक्षण सस्थाए खोली जाये, जिनमे केवल शब्द और विषय ज्ञान ही नहीं, अपितु विद्यार्थी की शारीरिक, बौद्धिक और आत्मिक शक्तियों का विकास भी हो तथा वहा पढने वाला विद्यार्थी राष्ट्रीय भावनाओ से ओतप्रोत हो। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए म मुशीराम ने 4 मार्च 1901 मे गुरुकुल की स्थपना करके शिक्षा क्षेत्र मे एक क्रान्तिकारी अध्याय का सूत्रपात किया।

शिक्षा के विषय मे महात्मा मुशीराम ने स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचार ''सत्यार्थ प्रकाश'' मे पढे। गुरुकुल का वर्णन करते हुए स्वामी दयानन्द ने लिखा कि ''जहा राजकुमार और निर्धन का बेटा दोनो के लिए एक समान आसन, भोजन, वस्त्रादि हो तथा गुरु उनका माता-पिता के समान ध्यान रखते हुए उनको शिक्षा दे, विद्या प्राप्ति का सस्थान शहरो के भीड-भरे वातावरण से दूर एकान्त शान्त स्थान मे होना चाहिए।''

आदर्श व्यक्तित्व : सारी मनुष्य जाति एक है। जन्म से कोई छोटा बडा या ऊचा नही है। जन्मगत जात-पात, हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, ये सब मनुष्यो के बनाये हुए विभाग है, ईश्वरीय व्यवस्था मे सब एक है, इस मान्यता को स्वामी श्रद्धानन्द जी ने हमेशा ही ध्यान मे रखा। अपने सभी पुत्र-पुत्रियो के अन्तर्जातीय विवाह कराये। एक ओर जहा हिन्दू मन्दिरो मे उपदेश दिया व आर्य समाज का प्रचार किया वहीं दूसरी ओर दिल्ली की जामा मस्जिद के इतिहास मे यह पहली घटना थी कि सन् 1919 मे उन्होने मुसलमानो को वहां से उपदेश दिया।

शुद्धि आन्दोलन : देश के स्वाधीनता के आन्दोलन मे सकीर्ण मस्तिष्को ने साम्प्रदायिक वातावरण बनाकर बाधा उपस्थित की। हिन्दू-मुस्लिम दगे होने लगे। बालात् व प्रलोभन से हिन्दुओ को मुसलमान व ईसाई बनाया जाने लगा। इस कार्य को रोकने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द ने निर्भीक कदम उठाया। **हिन्दुओ से मुसलमान, ईसाई बने लोगों को शुद्धि आन्दोलन द्वारा पुनः हिन्दू धर्म में दीक्षित किया।**

इसी क्रम मे कराची की असगरी बेगम एक मुस्लिम महिला अपने बच्चो के साथ दिल्ली आयी और उसने हिन्दू धर्म स्वीकार किया और उसका नाम शान्ति देवी रखा गया। उसके पिता और पति ने शान्ति देवी और स्वामी श्रद्धानन्द पर मुकदमा चलाया। 4 दिसम्बर 1926 को मुकदमे का फैसला सुनाया गया, जिसमें शान्ति देवी की जीत हुई। इससे कुछ साम्प्रदायिक लोग स्वामी श्रद्धानन्द से चिढ गये और उनको जान से मारने की धमकिया देने लगे। जो वीर योद्धा अग्रेजो की सगीनो से नहीं डरा, वह इन धमकियों से क्या डरता ? स्वामी श्रद्धानन्द ने इन धमकियो की ओर ध्यान नहीं दिया और वे अपने कार्य मे लगे रहे।

23 दिसम्बर 1926 को अब्दुल रशीद नाम का व्यक्ति उनसे मिलने आया। वे बीमार थे, फिर भी उसको मिलने का समय दिया और उस आततायी ने उन पर गोलिया चलाई और वीर योद्धा स्वामी श्रद्धानन्द की हत्या कर दी।

अध्याय-5

श्रद्धानन्द शूर अलबेला

—प्रो. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का जीवन अत्यन्त शिक्षाप्रद और घटनापूर्ण है। वे कथनी और करनी से एक थे। जो कहा, सो कर दिखाया।

दिल्ली के चादनी चौक मे सगीनो के सामने सीना तानकर निर्दोष जनता को बचाने वाले स्वामी श्रद्धानन्द की वीरता-शूरता की तुलना किस से की जाये?

जब ख्वाजा हसन निजामी ने दाइये इस्लाम लिखकर वेश्याओ को भी हिन्दुओ को धर्मचयुत करने का उपदेश आदेश दिया, तो आप ने शुद्धि आन्दोलन चलाया। मौत की धमकिया दी गयीं। आपके दरबार मे आने वाले बडे-बडे राजनेता आपसे दूर-दूर रहने लगे। लाला हरदेव सहाय जी मिलने गये, तो उनके एक प्रश्न के उत्तर मे आपने कहा, 'जब ईश्वर व सत्य मेरे साथ है, तो मुझे इस बात की कतई चिन्ता नही कि ये नेता लोग मुझ से कट गये हैं।'

गढवाल के पीडित हो या केरल के पीडित हो, आपने सबकी दिल खोलकर सेवा की। अस्पृश्यता के विरुद्ध वायक्कुम केरल मे सत्याग्रह करके इतिहास को एक नया मोड दिया। इतने दूरस्थ प्रदेश मे क्रान्ति का शख फूकना आप ही का काम था।

ईश्वर विश्वास तथा ईश्वर भक्ति का पहला फल आप निर्भयता मानते थे। हत्यारा आया। उसने कहा, ''मुझे प्यास लगी है।'' आपने कहा, ''धर्म सिह, जल लाओ, इसकी प्यास बुझाओ।''

वीर धर्म सिह तो उसे भीतर ही नही आने दे रहा था। आपने कहा, ''आने दो।''

बस यही महाराज के जीवन का सार है—

1 आने दो। द्वार खोल दो।

2 प्यासो की प्यास बुझाओ।

आओ मित्रो! प बुद्धदेव जी मीरपुरी की ये पक्तिया भाव विभोर होकर गाये। गगन गुजायें।

जाने था कौन कि भारत के
हित आपकी छाती यूं ढाल बनेगी।
श्रद्धानन्द सरीखे सूपत बता
जननी कब फेर जनेगी॥

❑❑

अध्याय-6

स्वामी श्रद्धानन्द

—पं महेन्द्र पाल आर्य

स्वामी श्रद्धानन्द का नाम सुनते ही आर्यजनो के सामने साहस का, सत्यता का, श्रद्धा का, कर्मठता का व ईश्वर भक्त का एक चित्र मानो सामने उपस्थित हो जाते है। वह चित्र भी उन्हीं का, जिन्हे न मृत्यु का भय था और न ही ससार की किसी अन्य शक्ति का।

स्वामी श्रद्धानन्द मे विपत्तियो से लडने का अदम्य साहस था और सगठन की अद्भुत क्षमता थी। कार्य करने मे उत्साह तथा हृदय मे अगाध ईश्वर भक्ति थी, और देश व धर्म के लिए अनन्य प्रेम था, धर्म प्रचार की सच्ची लगन व हृदय की विशालता के साथ लक्ष्य भी महान् था।

स्वामी श्रद्धानन्द ने आर्यसमाज तथा सत्य सनातन वैदिक धर्म के रक्षार्थ अपने को उसी प्रकार न्यौछावर किया, जिस प्रकार ऋषि दयानन्द ने किया।

मुशीराम अपने पिता के साथ काशी प्रवास के दिनो मे विश्वनाथ मन्दिर मे ईश्वर दर्शन को गये। मन्दिर मे घुसने की अनुमति नही मिली। कारण का पता चला, रीवा रियासत की रानी अभी दर्शन कर रही है, अत: अन्य का दर्शन पर रोक लगा। मुशीराम का जिज्ञासु मन बेचैन हो उठा और प्रश्नो को मन-ही-मन उछालते रहे। क्या यह मूर्ति सच मे विश्वनाथ की है ? क्या यह देवता कह सकते है ? जिनके अन्दर इतना पक्षपात हो ? फिर इसी जिज्ञासा ने मुशीराम को ईसाई बनने को प्रेरित किया। जब गिरजा मे गये, तो वहा कुछ और ही नजारा धर्मोपदेश देने वाले पोप का पोप लीला देखी, अर्थात एक पादरी को नन के साथ आपत्तिजनक दृश्य मे देखा, तो मुशीराम ईसाई बनते- बनते बचे। यह सब कुछ मुशीराम के जिज्ञासु वृत्ति का ही परिचायक है।

स्वामी श्रद्धानन्द का सत्य सनातन वैदिक धर्म की रक्षार्थ एक मान्ध अन्दर रशीद की गोली के द्वारा बलिदान धर्म की खातिर हुआ।

स्वामी श्रद्धानन्द ही आर्य जगत् के सन्यासी थे, जिन्होने इतिहास रचा है। दिल्ली के जामा मस्जिद मे वेद मन्त्रो का गुजायमान किया, जो न भूतो, न भविष्यति। जब उस समय के मुसलमान स्वामी श्रद्धानन्द को जामा मस्जिद मे तकरार के लिए ले गये, तो फिर मुसलमान की गोली का शिकार स्वामी जी को क्यो और कैसे होना पडा। क्योकि इससे बात स्पष्ट हो गयी कि स्वामी श्रद्धानन्द को मुसलमान भी नेता मानने लगे थे।

दरअसल, बात यह थी कि 1919 की घटना ने स्वामी जी को दिल्ली का सर्वमान्य नेता बना दिया था, तो स्वामी जी ने रालेट एक्ट के विरुद्ध सत्याग्रह के लिए जनता को तैयार कर सार्वजनिक सभा बुलाई ओर प्राय: 18 हजार की भीड मे स्वामी जी पहली बार राजनैतिक मच पर बोले।

स्वामी श्रद्धानन्द का शुद्धि आन्दोलन तो दिल्ली तथा भारत के सभी प्रान्तो को पार कर कराची तक पहुच गया, वहां से एक महिला असगरी बेगम अपने पति सलीम पर अत्याचार से दिल्ली आ धमकी और उनके पास पहुचकर आप बीती सुनाई और इस्लाम मत छोड वैदिक धर्म स्वीकार करने की प्रार्थना की। स्वामी जी ने उसको पुत्रीवत् सान्त्वना देकर पति तक पहुचाने का प्रयास किया, किन्तु असगरी ने उस जालिम पति के पास जाने को अस्वीकार किया।

अब स्वामी जी ने असगरी बेगम को वैदिक धर्म की दीक्षा देकर शान्ति देवी बनाकर महिला आश्रम मे भेज दिया। मात्र तीन महीने मे उस महिला के पिता, मौलवी ताज मुहम्मद, अपने दामाद सलीम को साथ लिये दिल्ली आ गये। स्वामी जी ने यथा सत्कार व वस्तुस्थिति की जानकारी दी।

अब इन लोगो ने वापस जाकर स्वामी श्रद्धानन्द, शान्ति देवी तथा कराची आर्य समाज के मन्त्री तीनो पर मुकदमा दायर कर दिया। 4 दिसम्बर 1926 को मुकदमे का फैसला आया। सभी अभियुक्त बरी हो गये।

आर्य लोगो को चाहिए स्वामी श्रद्धानन्द के शुद्धि आन्दोलन को गति देकर, अर्थात् शुद्धि कार्य मे अपना तन, मन, धन लगाकर स्वामी जी के छूटे कामो को पूरा करे।

❑❑

ज्ञान-कण

सबको हाथ की पाँच उँगलियों की तरह रहना चाहिए। हाथ की पाँच उँगलियाँ समान थोड़े ही हैं। कोई छोटी है कोई बड़ी, लेकिन हाथ से किसी चीज को उठाना होता है, तब पाँचों इकट्ठी होकर उठाती हैं। हैं तो पाँच, लेकिन काम वे हजारों का कर लेती हैं, क्योंकि उनमें एकता है।

❑❑

मानव-जाति को एकता का पाठ चींटियों से सीखना चाहिए।

❑❑

यदि चिड़ियाँ एकता कर लें, तो शेर की खाल खींच सकती हैं।

❑❑

पक्की टिकाऊ एकता वहीं पैदा होती है, जहाँ मन एक होते हैं। एकता का किला बड़ा दृढ़ है। इसके भीतर रहकर कोई प्राणी दुःख नहीं भोगता।

अध्याय-7

धर्मवीर पंडित लेखराम

लेखराम का जन्म दिनाक 8 विक्रमी सम्वत् 1915 (सन् 1858) को जेहलम जिला (अब पाकिस्तान) मे हुआ। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा उर्दू व फारसी मे हुई।

उनके दादा महता नारायण सिह सिख राज्यकाल मे वीर योद्धा थे। पिता तारा यिह महता भी कुशल सैनिक थे।

उन्होने पेशावर मे आर्य समाज की स्थापना की। वैदिक धर्म की अधिक जानकारी लेने के लिए वे एक मास का अवकाश लेकर महर्षि दयानन्द से मिलने अजमेर जा पहुचे। पेशावर वापस लौटकर "धर्मापदेश" उर्दू पत्रिका प्रारम्भ की। पुलिस सेवा मे रहते हुए भी वे धर्म प्रचार को पर्याप्त समय देते थे।

स्वधर्म त्यागकर अन्य मत की दीक्षा लेने के लिए तत्पर लोगो को बचाने के लिए वे सदैव सजग रहते थे। किन्तु एक मुस्लिम पुलिस इन्सपेक्टर उनसे चिढता था। एक दिन उसने कहा :

तुम ब्रिटिश सरकार की नौकरी करते हो ?

वैदिक धर्म मानवता की शिक्षा देता है। धर्म प्रचार से मुझे कोई भी नही रोक सकता, प जी ने उत्तर दिया।

24 सितम्बर 1884 को त्याग पत्र देकर उन्होने विदेशी दासता से मुक्ति पा ली और वैदिक धर्म ने न्याने "पण्डित लेखराम आर्य पथिक" कहलाये।

पेशावर मे रहते हुए लेखराम को मिर्जा गुलाम अहमद द्वारा लिखित "कुराने अहमदिया" पढने को मिली जिसमे मिर्जा ने स्वय को खुदाई पैगम्बर होने का दावा किया था। मिर्जा ने घोषणा भी की थी कि एक वष के लिए कोई भी व्यक्ति कादिया मे आकर उसके पास रहे, तो उसके चमत्कार देख सकता है। प लेखराम आर्य सस्कृति के अद्भुत दीवाने थे, उन्होंने मिर्जा को शास्त्रार्थ के लिए ललकारा। परन्तु मिर्जा न सुधरा पुनः मिर्जा गुलाम अहमद ने विष्णुदास को बहकाया कि यदि एक वर्ष के भीतर मुसलमान न हो जायेगा, तो इस्लाम के अनुसार मर जायेगा। प लेखराम के पास इसका समाचार तार द्वारा पहुचा। वे तुरन्त कादिया पहुचे, विष्णुदास की शकाओ का समाधान कर उसे आर्यसमाज का सभासद बनाया। साधारण जनता को मिर्जा की पाखण्ड-नीति का ज्ञान हो गया।

सिन्धी रईस दीवान सूर्यमलजी मुसलमान बनने पर तुले थे, उनके इस निश्चय की खबर आर्य पथिक लेखराम को मिली। वे शीघ्र वहा पहुचे। सेठ जी अलीपुर इलाके मे गये है, पुत्रो ने उन्हे टालना चाहा। परन्तु लेखराम अपने प्रयत्नो पर दृढ रहे। चार बार सिन्ध गये। पत्रो की भरमार कर दी। शास्त्रार्थ हुआ, जिसमे मौलवी हार गये। फलस्वरूप सदा के लिए सिध की जनता सचेत हो गयी।

शुद्धि आन्दोलन/27

2 मार्च 1884 ई को दो सिख नौजवान इस्लाम स्वीकार करने से पूर्व सिंह सभा स्यालकोट के अधिकारियो से मिले, पर उनकी शका का निवारण न हो सका। सिख सेनाधिकारियो ने उन्हे रोकना चाहा, तो एक ने सेना से त्यागपत्र दे दिया। दूसरा सेना मे रहते हुए डट गया कि मै मुसलमान बनूंगा। स्यालकोट के आर्य पुरुष लाला देवी राम सहाय को सूचना मिली, तो उन्होने प लेखराम को फौरन बुलवाया। आर्यसमाज स्यालकोट के प्रयत्नो से प लेखराम का उन सिख नौजवानो से शास्त्रार्थ हुआ, और उन्होने इस्लाम मत स्वीकार करने की जिद त्याग दी। प लेखराम ने अनेक भटके लोगों को धर्म का सच्चा मर्म समझाया। उन्होने 35 वर्ष की आयु मे लक्ष्मी देवी से विवाह किया, जिससे एक पुत्र हुआ, जो अधिक आयु न पा सका। आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के आदेशानुसार उन्होने महर्षि दयानन्द का चरित्र लिखने का निश्चय किया। 33 छोटे-बडे ग्रन्थ लिखे। वे महर्षि जीवन लिख रहे थे।

हैदराबाद (सिध) मे कुछ हिन्दू इस्लाम व ईसाई मत की ओर झुक रहे थे। प लेखराम ने स्वामी पूर्णानन्द जी को अपने साथ लिया, जो कि सिधी भाषा जानते थे। उन दोनो ने ईसाई व इस्लाम मत का तीव्र खण्डन किया। आपने "क्या आदम और हव्वा" हमारे माता-पिता थे, नामक पुस्तक लिखी और प्रबल प्रमाणो से सिद्ध किया कि सारी सृष्टि एक माता-पिता की सन्तान नहीं। इस प्रकार 8-10 युवक विधर्मी होने से बच गये।

पटियाला रियासत के पायल गाव मे एक हिन्दू ईसाई मत की दीक्षा लेने वाला था। प लेखराम को सूचना मिली, तो बिना सोचे-विचारे तीव्रगति वाली रेलगाडी मे सवार हो गये। गाडी पायल स्टेशन से गुजरने लगी, तो लेखराम ने अपना बिस्तर चलती गाडी से फेक दिया और स्वय भी कूद पडे। विधर्मी होनेवाले व्यक्ति को जब पता चला कि अपने शरीर पर चोटे झेलकर केवल मुझे बचाने पण्डित जी आये है, तो उसने ईसाई मत स्वीकार करने का विचार त्याग दिया।

शुद्धि की कामना से एक मुस्लिम युवक वैदिक धर्म की दीक्षा लेने आया, परन्तु वह तो षड्यन्त्रकारी था। मुल्ला मौलवियो ने उसे प लेखराम की हत्या करने के लिए भेजा था। पण्डित जी ने उसे घर पर शरण दी। दरवाजे पर षड्यन्त्रकारी ने पण्डित लेखराम के पेट मे छुरा घोप दिया। पण्डित लेखराम महर्षि दयानन्द का जीवन लिखते हुए 8 मार्च सन् 1867 को शहीद हो गये।

आर्यसमाज की गरिमा शास्त्रार्थ व लेखन बिना अधूरी है। उन्होने छूत-छात, स्त्री-शिक्षा, अन्धविश्वास व कुरीतिया दूर करने के लिए शास्त्रार्थ किये। वे जबरदस्ती अथवा लोभ-लालच मे धर्म (मत) परिवर्तन के विरुद्ध थे।

6 मार्च सन् 1867 को अमर शहीद लेखराम ने कहा था—"आर्यसमाज मे तहरीर (लेखन) व तकरीर (भाषण) का काम कभी बन्द नही होना चाहिए।

❑❑

अध्याय-8

हिन्दुत्व की वीर भुजा

—रामधारी सिह दिनकर

आक्रामकता की ओर

राजा राममोहन राय और रानाडे ने हिन्दुत्व के पहले मोर्चे पर लडाई लडी थी, वह रक्षा या बचाव का मोर्चा था। स्वामी दयानन्द ने आक्रामकता का थोडा बहुत श्रीगणेश कर दिया, क्योकि वास्तविक रक्षा का उपाय तो आक्रमण की ही नीति है। सत्यार्थ प्रकाश मे जहा हिन्दुत्व के वैदिक रूप का गहन आख्यान है, वहा उसमे ईसाइयत और इस्लाम की आलोचना पर भी अलग अलग दो समुल्लास हैं। अब तक हिन्दुत्व की निन्दा करने वाले लोग निश्चिन्त थे कि हिन्दू अपना सुधार भले करता हो, किन्तु बदले मे हमारी निन्दा करने का उसे साहस नहीं होगा। किन्तु इस मेधावी एव योद्धा सन्यासी ने उनकी आशा पर पानी फेर दिया। यही नहीं, प्रत्युत, जो बात राममोहन केशवचन्द्र और रानाडे के ध्यान मे भी नहीं आयी थी, उस बात को लेकर स्वामी दयानन्द के शिष्य आगे बढे और उन्होने घोषणा की कि धर्मचयुत हिन्दू प्रत्येक अवस्था मे अपने धर्म मे वापस आ सकता है एव अहिन्दू भी यदि चाहे, तो हिन्दू धर्म मे प्रवेश पा सकते हैं। यह केवल सुधार की वाणी नहीं थी जाग्रत हिन्दुत्व का समर नाद था। और सत्य ही रणारूढ हिन्दुत्व के जैसे निर्भीक नेता स्वामी दयानन्द हुए वैसा और कोई नहीं हुआ।

सच पूछिये तो स्वामी जी केवल इस्लाम के ही आलोचक नही थे, वे ईसाइयत और हिन्दुत्व के भी अत्य ' क ड आलोचक हुए है। सत्यार्थ प्रकाश के त्रयोदश समुल्लास मे ईसाई मत की आलोचना है और चतुर्दश समुल्लास मे इस्लाम की। किन्तु ग्यारहवे और बारहवे समुल्लासो मे तो केवल हिन्दुत्व के ही विभिन्न अगो की बखिया उधेडी गयी है और कबीर, दादू तथा चार्वाक एव जैनो और हिन्दुओ के अनेक पूज्य पौराणिक देवताओ मे से एक भी बेदाग नहीं छूटा है। वल्लभाचार्य और कबीर पर तो स्वामी जी इतना बरसे हैं कि उनकी आलोचना पढकर सहनशील लोगो की भी धीरता छूट जाती है। किन्तु यह सब अवश्यम्भावी था। यूरोप के बुद्धिवाद ने भारतवर्ष को इस प्रकार झकझोर डाला था कि हिन्दुत्व के बुद्धि सम्मत रूप को आगे लाये बिना कोई भी सुधारक भारतीय सस्कृति की रक्षा नहीं कर सकता था। स्वामी जी ने बुद्धिवाद को कसौटी बनायी और उसे हिन्दुत्व, इस्लाम और ईसाइयत पर निश्छल भाव से लागू कर दिया। परिणाम यह हुआ कि पौराणिक हिन्दुत्व तो इस कसौटी पर खण्ड-खण्ड हो ही गया, इस्लाम और ईसाइयत की भी सैकडो कमजोरिया लोगो के सामने आ गयी।

स्वामी जी का कहना था कि यद्यपि मै आर्यावर्त देश मे उत्पन्न हुआ और बसता हू, तथापि जैसे इस देश के मत मतान्तरो की झूठी बातो का पक्षपात न करके यथातथ्य प्रकाश करता हू, वैसे ही दूसरे देशस्थ या मतोन्नति वालो के साथ भी बरतता हू। जैसा स्वदेश वालो के साथ मनुष्योन्नति के विषय मे बरतता हू, वैसा विदेशियो के साथ भी तथा सब सज्जनो से भी बरतना योग्य है। ❑❑

अध्याय-9

शुद्धि

—पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय

शुद्धि

शुद्धि का अर्थ है, पवित्रता। ससार मे कोई वस्तु ऐसी नही है, जो अन्य वस्तुओ के ससर्ग मे आकर अपवित्र न होती हो, परन्तु हर एक वस्तु को पवित्र करने की विधि है। अपवित्र सोने को आग मे तपाकर शुद्ध कर लेते है। अशुद्ध बर्तन को मिट्टी से माजकर और जल मे धोकर शुद्ध करते है। मनु जी महाराज का कथन है कि—

अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति मनः सत्येन शध्यति।
विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति॥

मनुष्य के शरीर का मल जल मे स्नान करने से दूर होता है। मन मे यदि दोष आ जाये, तो सत्य के आचरण से शुद्ध होता है। विद्या की प्राप्ति और तप का जीवन व्यतीत करने से अन्तरात्मा शुद्ध होता है और बुद्धि ज्ञान से निर्मल होती है।

कुछ दिनो पश्चात् स्वभावत· आलस्य और प्रमाद ने अपना प्रभाव डाला। लोगो ने वेदो का पठन-पाठन छोड दिया। आपस मे लडाई-झगडे होने लगे। भारतवर्ष के लोगो ने बाहर प्रचारार्थ जाना बन्द कर दिया और अन्य देशो के लोग अनेक प्रकार के वेदविरोधी धर्मो के अनुयायी हो गये। भारतवर्ष में अवश्य वैदिक धर्म का प्रचार था और जो लोग बाहर से आ जाते थे, वह वैदिक सस्कृति से लाभ उठाते थे, उनके साथ किसी प्रकार भेद भाव नही था। वह उसी प्रकार अपने धार्मिक कृत्यो मे भाग ले सकते थे, जैसे अपने देश के लोग।

परन्तु अध:पतन जब एक बार आरम्भ हो जाता है, तो बडी कठिनता से रुकता है। कुछ दिनो पीछे हिन्दओ की यह अवस्था भी नही रही। पहले धार्मिक पतन हुआ। फिर सभ्यता का ह्रास हुआ। फिर नैतिक विप्लव की बारी आयी। क्षात्र बल कम हो गया। आपस की फूट के कारण बाहर वालो के आक्रमण पर आक्रमण होने लगे। पराजित लोगो की उच्च से उच्च बातो को भी विजेता लोग घृणा की दृष्टि से देखने लगते है। जब मुसलमानो ने आक्रमण किया और हिन्दू उनसे पराजित होकर अपना देश खो बैठे, तो मुसलमानो ने अपने धर्म का इन पर अध्यारोप किया।

उस समय उनको यही एक बात सूझी कि जिस प्रकार हो सके अपनी बची बचाई पूजी की रक्षा करनी चाहिए। इसलिए उन्होने विजातीय लोगो से तथा उनकी सस्कृति से असहयोग करना आरम्भ कर दिया। मुसलमानों के हाथ का जो खायेगा या उनके साथ केई व्यवहार करेगा, वह हिन्दू धर्म से बहिष्कृत समझा जायेगा। इस नियम ने उस समय हिन्दुओ की कुछ रक्षा अवश्य की। उस समय दूसरों को अपने धर्म मे मिलाने का तो प्रश्न ही नही उठता था। हिन्दुओ की चोटी मुसलमानो के हाथ मे थी। मुसलमान शासक थे, उनको यह कब सह्य था कि कोई उनके धर्म की मीमासा करता।

परन्तु इस बात ने हिन्दुओ को हानि भी बहुत पहुचाई। जो छूत छात मुसलमानो के प्रति दिखाई गयी, वह शनैः शनैः हिन्दुओ ने परस्पर एक-दूसरे के लिए भी दिखानी आरम्भ की।

होते-होते ऐसा युग आ गया कि हिन्दू लोग सर्वथा भूल गये कि कभी वह भी दूसरो को अपने धर्म मे दीक्षित किया करते थे।

1 कश्मीर मे पहले मुसलमानी राज न था। उत्तर से मध्य एशिया के एक विजेता ने कश्मीर को जीता। परन्तु वह मुसलमान न था, उसने गीता का उपदेश सुना और हिन्दू होना चाहा। परन्तु पण्डितो ने उनको अपने धर्म मे लेने से इनकार कर दिया। तब वह मुसलमान हो गया। और उसमे इतनी कट्टरता आ गयी कि काश्मीरी ब्राह्मणो को वहा से भागना पडा। काश्मीर मे हिन्दू ह्रास का बीज तभी बोया गया।

2 अकबर बादशाह को हिन्दू धर्म प्रिय था। उसने कई बार हिन्दू होने की इच्छा प्रकट की। कहावत है कि बीरबल ने एक गधे को साबुन से धोना शुरू किया। अकबर ने पूछा, "क्या कर रहे हो।" बीरबल ने कहा, "मै इसे साबुन लगाकर बछडा बनाऊगा।" अकबर बोला, "क्या गधा साबुन लगाकर बछडा हो सकता है?" बीरबल ने उत्तर दिया, "क्या मुसलमान भी कभी हिन्दू हो सकता है?" सम्भव है कि यह केवल कहानी मात्र हो, परन्तु इस से हिन्दुओ के दृष्टिकोण का वास्तविक रूप मालूम हो जाता है। हिन्दुओं की बहुत दिनो से ऐसी धारणा रही है कि बछडा तो गधा हो सकता है, परन्तु गधा बछडा नही हो सकता।

इस निर्बलता को दूसरे मतवालो ने देखा और उससे लाभ उठाया। मुसलमान और ईसाइयो ने तो खूब ही लूट मचाई। उनका काम सुगम हो गया। यदि हिन्दुओ मे यह दोष न होता, तो मुसलमान और ईसाइयो को अपने धर्म की उत्कृष्टता दिखाने के लिए शास्त्रार्थ करना पडता, समझाना पडता।

हिन्दुओ ने छोटी-छोटी बातो पर अपने भाइयो को निकाल दिया और वे जाकर मुसलमानों में मिल गये। यदि किसी मुसलमान को यह आवश्यकता हुई कि अमुक हिन्दू को मुसलमान बनाया जाये, तो उसने झूठ-मूठ खबर उडा दी कि इसने हमारे हाथ का पानी पी लिया है। यह सुनते ही उसके परिवार वालो ने उसे निकाल दिया और उसने रो-रोकर अपने धर्म का परित्याग किया। ईसाइयो ने दक्षिण मे रात्रि के समय कुओ मे रोटियां डाल दी और गाव के लोगो ने बिना जाने उन कुओ का पानी पी लिया। दूसरे दिन इन पादरियो ने प्रसिद्ध कर दिया कि अमुक लोगों ने हमारी रोटियो से दूषित पानी पीया है। जाती वालो ने तुरन्त उनको निकाल दिया और कहा कि बस तुम ईसाई हो गये। जो स्वय गिरना चाहे, उसे कौन बचावे।

ऋषि दयानन्द ने इन सब अवस्थाओ को देखा और उन्होने हमारा दृष्टिकोण बदला। उन्होने तीन बाते बताई—1 पहले पृथ्वीतल के सभी मनुष्य वैदिक धर्मी थे। 2 अज्ञान और आलस्यवश अन्य धर्मो का प्रचार हुआ। 3 फिर से सब वैदिक धर्मी हो सकते है। कोई ऐसा पतित मनुष्य नहीं है, जो अपना सुधार न कर सके।

यह तीनो बाते हिन्दुओं के मुर्दे शरीर मे जीवन डालने के लिए काफी थीं। जो स्वामी दयानन्द के अनुयायी होकर आर्य समाज में शामिल हो गये, उन्होने अपना कर्तव्य समझा कि वैदिक धर्म के

अमृत उपदेशो का न केवल हिन्दुओ, किन्तु ईसाई और मुसलमानो मे भी पचार किया जाये, जिससे मनुष्य मात्र की उन्नति हो। उधर जब कुछ ईसाई मुसलमानो या नौ मुस्लिमो ने सुना कि हम भी वैदिक धर्म से लाभ उठा सकते है, तो उन्होने वैदिक धर्म ग्रहण करने की इच्छा प्रकट की। एक शुद्धि भी अलखधारी जी की महर्षि दयानन्द ने स्वय की थी।

पण्डित लेखराम ने तो शुद्धि का दरवाजा ही खोल दिया। जिन लोगो को वैदिक धर्म प्रिय लगा, वह झट से शुद्ध होकर आर्य हो गये। यह बडा उपकार का कार्य था। परन्तु क्या कोई ऐसा भी अच्छा काम है, जिसका कोई विरोध न करे। चादनी रात सभी को प्रिय नही होती। कुछ काली रात के भी इच्छुक होते ही है। शुद्धि का विरोध पहले तो हिन्दुओ की ओर से हुआ, फिर मुसलमानो की ओर से। जिन्होने लोगो को शुद्ध किया था, उनका बहिष्कार किया गया।

अब बाहर का विरोध सुनिये। अब तक मुसलमान और ईसाई हिन्दुओ की ओर से नि:शक थे। वे हिन्दुओ को कच्चा धागा समझते थे, जब चाहा झटक दिया। अब इस नयी शक्ति को देखकर उनकी भी आखे खुलीं। इससे पहले उनके लिए हिन्दू धर्म का दरवाजा बन्द था। आर्यो ने यह घोषणा कर दी कि ईसाई और मुसलमान भी वैदिक धर्मी हो सकते हैं। एक प्रकार से आर्यसमाज ने उनको वे अधिकार दिला दिये, जो अब तक उनको प्राप्त न थे। परन्तु ईसाई पादरी ओर मुसलमान मोलवियो को यह अधिकार अच्छे न लगे। उनको शका हो उठी कि इससे हमारी सख्या कम हो जायेगा। वे इस प्रश्न को जो सर्वथा धार्मिक और सामाजिक था, राजनैतिक बना बैठे। पहले तो हिन्दुओ मे दूसरो को मिलाना नयी बात नहीं है। छत्रपति शिवाजी ने कई मुसलमानो को हिन्दू बनाया था। नये रोग की नयी दवा की जाती है। जब धार्मिक स्वतन्त्रता है, तो वह सभी के लिए होनी चाहिए। जिसका जी चाहे उस धर्म का पालन करे।

लाखो मलकाने जो पहले क्षत्रिय थे, किसी समय नाम के मुसलमान बना लिये गये थे। वे पचासो वर्षो से अभ्यर्थना करते थे कि हिन्दू क्षत्रिय लोग हमे अपने मे मिलाये। इसमे न तो जबरदस्ती थी और न लालच, मलकानो की यह इच्छा स्वाभाविक थी। जो बिछुडा भाई आपसे मिलना चाहता है, उसका स्वागत करना आपका परम कर्तव्य है। इस समय हिन्दुओ को अपनी जाति तथा सस्कृति की रक्षा करने के लिए इस जटिल समस्या पर पूरा विचार करना चाहिए। क्योकि मुसलमान और ईसाई दोनो भरसक हिन्दुओ को हडप करने की कोशिश कर रहे हैं। सैकडो ईसाई मिश्नरी यूरोप और अमेरिका से आते हैं और करोडो रुपया ईसाई बनाने में व्यय करते हैं। अगर ऐसा ही हाल रहा, तो हिन्दू सस्कृति के मिट जाने का भय है। इस लिए हिन्दुओ को सावधान होना चाहिए।

इसके लिए दो बातो की आवश्यकता है। एक तो यह कि सर्वसाधारण मे अपने धर्म का प्रचार कर दिया जाये कि कोई विधर्मी होने ही न पावे। दूसरे यदि कोई विधर्मी हो जाये और फिर पश्चाताप करे, तो उसको शुद्ध होने और हिन्दू सोसायटी मे हिल-मिल जाने के लिए पूरी सुविधाये हो।

नीच और दलित जातियो को उठाओ। उनसे अच्छा व्यवहार करो और उनमे धर्म का प्रचार करो, जिससे कोई उसको बहका न सके। यदि कोई पतित हो जाये, तो उसे प्रेम से समझाओ। नगर-नगर और ग्राम-ग्राम मे शुद्धि सभाये खोलो और उनका ठीक प्रबन्ध करो। ❑❑

अध्याय-10

महात्मा हंसराज की बहुमुखी आभा

—पद्मश्री ज्ञान प्रकाश चोपड़ा

शुद्धि

शिक्षा से जितना अनुराग महात्मा जी को था, उतना ही शुद्धि से भी था। उन्हे इस बात की बडी तडप थी कि हिन्दू समाज की अनेक कुरीतियो के कारण हिन्दू नर-नारी तेजी से ईसाई और मुसलमान बनते जा रहे है। हिन्दुओ की सख्या घटती जा रही है। कोई ऐसा उपाय होना चाहिए, जिससे यह प्रवाह रुके। छुआछूत की कुप्रथा के कारण अछूत समझे जाने वाले हिन्दू ईसाई और मुसलमान बन रहे थे। विधवाओ के विवाह पर रोक होने के कारण हिन्दू विधवाए, जिनकी संख्या करोडों में थी, दूसरे धर्मो में शरण ले रही थीं। दु:ख की बात यह थी कि जो भी व्यक्ति किसी भी कारण ईसाई या मुसलमान बन जाता था, उसे धर्म-ध्वजी हिन्दू फिर हिन्दू बनाने को तैयार नहीं थे। मुसलमानों को हिन्दू बनाने के लिए तैयार करना जितना बडा काम था, उससे बडा काम यह था कि हिन्दुओ को इस बात के लिए राजी किया जाये कि वे शुद्ध हुए मुसलमानो को खुले दिल से अपनाये।

श्रद्धानन्द और हंसराज

शुद्धि के कार्य मे स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा हंसराज, दोनो ने ही बडी लगन से काम किया। न केवल मालाबार में मोपला उत्पातो मे बलात् मुसलमान बनाये गये 2500 हिन्दुओं को शुद्ध करके फिर हिन्दू बनाया गया, अपितु उत्तर प्रदेश के 418 गावो मे बसे मलकाने राजपूतो को, जो औरगजेब के काल मे बलात् मुसलमान बनाये गये थे, हजारों की सख्या मे सामूहिक रूप से शुद्ध करके फिर वैदिक धर्मी बनाया गया। इससे न केवल मुसलमान, अपितु अंग्रेजी सरकार और काग्रेसी नेता भी आर्यसमाज से रुष्ट हो गये। सरकार का कहना था कि इससे साम्प्रदायिकता फैलती है और कांग्रेसी नेताओ का कहना था कि इससे हिन्दू-मुस्लिम एकता नष्ट होती है, जो स्वाधीनता प्राप्त करने के लिए अत्यन्त आवश्यक है। मुसलमान जो तबलीग करके हिन्दुओ को मुसलमान बना रहे थे, उससे हिन्दू-मुस्लिम एकता नष्ट नहीं होती थी।

शुद्धि आन्दोलन के कारण भारतीय शुद्धि सभा के प्रधान स्वामी श्रद्धानन्द और उपप्रधान महात्मा हंसराज, दोनो ही कट्टरपथी मुसलमानों की आखो का काटा बन गये। उन्हे मार डालने की धमकियां दी जाने लगीं। स्वामी श्रद्धानन्द जी की तो गोली मारकर हत्या भी कर दी गयी।

ईसाईयत कैसे बढ़ी ? सेवा से और इस बात से कि उसके सब प्रचारक, अध्यापक बाईबिल के बहुत अच्छे विद्वान् थे। इसलिए हमारे सब अध्यापको और प्राचार्यो को वैदिक धर्म का ज्ञान होना चाहिए, जिससे वे अपनी संस्कृति के बारे मे लोगो को बता सके। नेपाल में इस्लाम का फैलाव हो रहा है और पूर्वोत्तर में ईसाइयो से हमे धमकिया मिल रही है। यदि उन अधेरो को बने रहने की जिद है, तो आर्यसमाज के दीपकों को भी इनको समाप्त करने की जिद है। ❑❑

अध्याय-11

शुद्धि आन्दोलन में महात्मा हंसराज

—डॉ. योगेश्वर देव

इस्लाम मजहब का आरम्भ अरब देश मे हजरत मुहम्मद ने किया। उन्होने स्वय को अल्लाह का रसूल (संदेशवाहक) बतलाया। उनकी प्रकृति मे धर्म और राजनीति दोनों घुले मिले थे। धर्म उनके लिए राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने का साधन मात्र था। उनकी मृत्यु के बाद तलवार के जोर से इस्लाम का प्रचार किया गया। मुसलमानो मे इतना जाेश था कि उन्होने कुछ ही समय मे पश्चिमी एशिया के देशो और यूरोप के कई भागो पर अधिकार कर लिया। भारत में राजपूतो की आपसी फूट का लाभ उठाकर उन्होंने विजय प्राप्त कीं और अपना शासन स्थापित किया। राजसत्ता के दबाव से लोगों को मुसलमान बनाया गया।

हरिजन मुसलमान बनते गये

हिन्दू समाज की कुरीतियो ने भी इस्लाम के प्रचार मे योग दिया। हरिजनो की दुर्दशा, छुआछूत, विधवाओं के पुनर्विवाह का निषेध आदि ने स्थिति को बिगाडा। नर-नारी विवशता में मुसलमान बनते गये। ऋषि दयानन्द ने इस समस्या का हल निकाला शुद्धि। जो लोग किन्हीं भी कारणो से मुसलमान बन गये हैं, और वे फिर हिन्दू बनना चाहते है, उन्हें यज्ञ करके यज्ञोपवीत पहनाओ और फिर आर्य बना लो।

जब आर्य समाज ने इस क्षेत्र में पाव रखा, तब अस्सी प्रतिशत मुसलमान फिर हिन्दू बनने को तैयार थे। परन्तु रूढिवादी सनातनी हिन्दू उन्हे अपनाने को राजी नहीं हुए। बाद मे जब किसी प्रकार सनातनी हिन्दुओ को मना लिया गया, तब तक मुसलमानो मे कट्टरता आ चुकी थी।

मोपलाओं की शुद्धि

इन सब कठिनाइयो के होते हुए भी मालाबार मे मोपलाओ द्वारा जबरदस्ती मुसलमान बनाये गये 2500 हिन्दुओं को शुद्ध किया गया। उनकी देखादेखी टीपू सुलतान के दिनो मे मुसलमान बने बहुत से लोग भी फिर हिन्दू बन गये।

भारतीय शुद्धि सभा की स्थापना

दिसम्बर 1923 मे आर्य महाराजा सर नाहरसिह के सभापतित्व मे राजपूत उपकारिणी सभा ने मलकाने राजपपूतों की शुद्धि करने का प्रस्ताव पास कर दिया। आगरा मे भारतीय शुद्धि सभा की स्थापना की गयी, जिसके प्रधान स्वामी श्रद्धानन्द जी और उपप्रधान महात्मा हसराज जी थे।

कांग्रेस की एक समिति ने मलकानो की हार्दिक इच्छा को जानने के बाद यह तो माना कि मलकानो को हिन्दू बनने का अधिकार है, फिर भी उसने स्वामी श्रद्धानन्द जी को, जो कांग्रेस के भी नेता थे, शुद्धि का काम करने से रोक दिया।

न स्वामी श्रद्धानन्द रुके, न महात्मा हंसराज

शुद्धि कार्य की गाड़ी को चलाते रहने के लिए महात्मा हसराज आगरा पहुच गये थे। आर्य हिन्दू नेताओ की सभा मे उन्होने स्वामी श्रद्धानन्द जी से मार्मिक अपील की कि वे इस महत्त्वपूर्ण कार्य से अलग न हो। यह ठीक है कि स्वामी जी राजनीतिक नेता है परन्तु जब मौलाना मुहम्मद अली और शोकत अली राजनीतिक नेता होते हुए भी अपने धर्म के प्रचार मे सलग्न है, तब स्वामी जी ही क्यो रुके ? स्वामी श्रद्धानन्द जी ने महात्मा जी का अनुरोध स्वीकार किया और घोषणा की कि वह शुद्धि का काम जारी रखेगे।

हिन्दुओं की पाचन शक्ति दुर्बल

हिन्दुओ (आर्यो) की आज जो दुर्दशा है उसका कुछ कारण तो विरोधियो की शक्ति है, परन्तु बहुत बडा कारण हिन्दुओ की जात-पात की फूट है। शुद्धि का काम सरल नही था। मुसलमानो और कांग्रेस से अधिक बाधा डालने वाले कट्टरपथी हिन्दू ही थे। वे शुद्ध हुए मलकानों को बराबरी के स्तर पर अपनी बिरादरी मे मिलाने को तैयार नहीं थे। एक ओर उन्हे समझाना पडा कि मलकाने तुम्हारी ही बिरादरी के अग है। उन्हे अपनाने मे तुम्हारा अपना ही हित है।

शुद्धि समारोह

अब प्रश्न उठा कि शुद्धि किस तरह की जाये ? सनातन धर्मियो के पास इसका कोई निश्चित विधि-विधान नही था। इस समस्या का हल ढूढने के लिए राजपूतों का एक विराट् सम्मेलन 30-31 मई 1923 को वृन्दावन मे हुआ, जिसका सभापतित्व महाराजा नाहरसिंह ने किया। राजपूतो का इतना बडा सम्मेलन इससे पहले कभी न हुआ था। इसमे राजा, महाराजा, जागीरदार, जमींदार तथा राजपूतो की हर जाति के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए थे। दस हजार दर्शको के लिए पडाला बनाया गया, जिसे महात्मा हसराज जी ने अपने कार्यकर्ताओ से तैयार करवाया था। सम्मेलन का सारा व्यय शुद्धि सभा के सिर था।

26 मई को कई सौ प्रमुख राजपूतो की एक सभा हुई, जिसमे निश्चय हुआ कि मलकाने राजपूतो को शुद्ध करके उनसे 'हुक्के' का सम्बन्ध जोड लिया जाये। 30 मई को खुला अधिवेशन हुआ। जब सभा प्रधान ने पडाल मे प्रवेश किया, तब 'महाराणा प्रताप की जय' के नारो से आकाश गूज उठा।

शुद्धि सस्कार के पुरोहित स्वामी श्रद्धानन्द जी, महात्मा हंसराज जी और पडित गिरिधर शर्मा थे। सम्मेलन की आरम्भिक प्रार्थना एक सनातनधर्मी पण्डित ने करवायी। उस दिन जो सहभोज हुआ, वह अद्‌भुत दृश्य था। प्राचीन काल की आर्य सस्कृति फिर जाग उठी। अपने पराये को भूलकर लोगों ने प्यार से एक-दूसरे के साथ बैठकर भोजन किया।

शुद्धि की आंधी

इसी तरह मैनपुरी मे भी सम्मेलन हुआ। शुद्धि का तेजी से प्रचार होने लगा। मलकानो के गाव के गाव शुद्ध होने लगे। महात्मा हसराज शुद्धि सस्कारो मे स्वय उपस्थित रहते। कई बार बहुत अड़चनो का सामना करना पडता। एक बार एटा जिले के अमरसिह कागला गाव मे जब महात्मा जी पहुचे, तब मलकानों ने कह दिया कि हम तो तब शुद्ध होगे, जब हमारी अपनी बिरादरी हमे अपना ले। शुद्धि की तैयारी पूरी हो चुकी थी। राजपूत भी चाहते थे कि मलकाने शुद्ध हो, परन्तु उन्हे अपनी बिरादरी मे मिलाने पर आपत्ति करते थे।

प्रातः दस बजे से दोपहर बाद तीन बजे तक यह मान-मनौवल चलती रही। वहा पुलिस भी थी और मुसलमान मौलवी भी। उधर मुसलमान मलकानो को उकसाते थे और इधर कुछ हिन्दू राजपूतो को बहकाते थे कि तुम मलकानो को शुद्ध नही कर रहे, अपितु स्वय मुसलमान हो रहे हो। तीन बजे दौलतसिह नामक एक राजपूत आगे बढा और छोटे-बडे सब राजपूतो को सम्बोधित करते हुए बोला—'तुम अपने सम्मेलन के फैसलो के प्रति विद्रोह कर रहे हो। तुम शत्रुओ के हाथो मे खेलने लगे हो। क्यो अपनी नाक कटवाते हो।'

उस नवयुक की बात सबके दिलो मे उतर गयी। राजपूत मलकानो को शुद्ध करके अपनी बिरादरी में मिलाने के लिए तैयार हो गये। शुद्धि का काम सम्पन्न हो गया। उसके बाद शानदार भोज हुआ।

शुद्धि की आधी जोर से बहने लगी। गाव के गाच धड़ाधड़ शुद्ध होने लगे।

इससे मुसलमान बहुत क्षुब्ध हुए। स्वामी श्रद्धानन्द और महात्मा हसराज को हत्या की धमकिया दी गयी।

षड्‌यन्त्र कब और कैसे रचा गया, यह भेद कभी खुला नहीं, परन्तु हुआ यह कि 23 दिसम्बर 1926 को अब्दुल रशीद नामक मुसलमान ने स्वामी श्रद्धानन्द जी को गोली मारकर उनकी हत्या कर दी। उसके बाद शुद्धि आन्दोलन ठण्डा पड गया।

महात्मा जी ने आगरा, मथुरा और काशी मे शुद्धि-केन्द्र स्थापित किये और विश्वबन्धु अमरनाथ बाली, आनन्द स्वामी तथा खुद भी शुद्धि के जोखिम भरे काम मे लग गये।

एक बार महात्मा जी मस्तानचन्द के साथ पूरा ग्राम शुद्ध करके आगरा लौट रहे थे। रास्ते में खबर मिली कि आज रात को मुसलमान शुद्धि-केन्द्र पर आक्रमण करके शुद्धि करने वालो को मार

देगे। सन्ध्या करके महात्मा जी रोज की जगह सोने चले गय। मस्ताचन्द ने उपहास भरे लहजे से कहा—''अगर आज हम दोनो मारे गये, तो यह छपेगा कि महात्मा जी ने शुद्धि के लिए अपनी जान गवा दी और उनके साथ एक चपरासी भी मारा गया।'' महात्मा जी ने हसकर जवाब दिया—''भाई! मेरा क्या है, मैं तो पका फल हू। आज नहीं, तो कल मर जाऊ या मारा जाऊ एक ही बात है। तुम मारे गये, तो मुझे दुःख होगा। अभी तुम जवान हो, अभी तुमने देखा ही क्या है? ब्राह्मणी विधवा हो जायेगी और मुझे कोसेगी।'' और इस बात पर दोनो खिलखिलाकर हस पडे। ऐसे थे परम विनोदी लौह पुरुष महात्मा हसराज।

उपद्रवों में सहायता

मोपला विद्रोह 1921-1922—1921 मे भारत के पश्चिमी तट पर मालाबार मे मुसलमानो ने सरकार के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और बिना कारण हिन्दुओ पर आक्रमण कर दिया। देहात मे उनके मकान जला दिये, मन्दिर तोड डाले मारधाड करके सैकडो मार डाले और सहस्रो बलपूर्वक मुसलमान बना लिये गये। सैन्सर के कारण पहले तो कुछ पता न लगा, किन्तु जब महात्मा हसराज के पास सहायतार्थ तार आया, तो वे चिन्तित हो उठे। स्थानीय हिन्दू आतक, छुआछूत और जातीय भेदभाव के कारण सहयोग से कतराते थे। पहले दिन दो हजार पीडितो को खाना दिया गया जो बाद मे बढकर 12,000 की संख्या तक पहुच गया। सारे के सारे धर्मान्तरित व्यक्तियो को शुद्ध किया गया, और मन्दिरो की मरम्मत कराई गयी।

डी ए वी वालो ने शिमला के पादरी स्टोक्स को 1923 मे शुद्ध किया। यह पादरी अमरीका से आकर कोटखाई से नारकडा तक ईसाई मत का प्रचार करता था। वह डी ए वी सस्था और उसके कार्यो से प्रभावित हुआ। उसने वैदिक साहित्य का भी अध्ययन किया और अन्त मे शुद्ध होकर सत्यानन्द नाम से वैदिक धर्म का प्रचारक बन गया। इसी प्रकार अछूतोद्धार मे डी ए वी ने बडा कार्य किया। मालाबार और दक्षिण भारत मे अछूतो के लिए कई सडके बन्द होती थी और मन्दिरो तथा उत्सवो मे उनका प्रवेश वर्जित होता था। डी ए वी के प्रयत्नो से वे उन बन्धनो को तोडने मे सफल हुए। ❑❑

| ज्ञान कण |

सन्तोष मे परमानन्द की प्राप्ति होती है। सुख चाहने वाले मे सयम होना चाहिए। सुख का मूल सन्तोष है दु:ख का असन्तोष।

❑❑

सुख सन्तोष से प्राप्त होता है। विलास से सुख कभी नही मिल सकता।

अध्याय-12

शुद्धि का सुदर्शन चक्र

—मनुदेव अभय 'विद्यावाचस्पति', एम ए.

विगत कई वर्षों से इस देश [illegible] र्मों के अनुयायियो की सख्या मे लगातार भयकर कमी होती दिखाई दे रही है। आर्यसमाज के [illegible] वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द की सूक्ष्म दृष्टि इस भावी क्षति को देख रही थी। उन्होंने इस [illegible] आर्य (हिन्दू) क्षति की रक्षा के लिए 'बौद्धिक प्रत्याक्रमण' की नीति का मार्गदशन किया। महर्षि के प्रार्दुभाव से पूर्व दो मोटे चूहे इस जाति को कुतर-कुतर कर खा रहे थे। बगाल के कोलकत्ता (कलकत्ता) मे वाइसराय को धर्म प्रचार के लिए ईसाई पादरियो की एक सेना रखने की सुविधा दी गयी थी तो दूसरी ओर मुसलमान मुल्ला-मौलवी फारसी-उर्दू अरबी का प्रचार कर हिन्दुओ में हीनता के भाव भरकर चोटी काटकर दाडी रखने तथा धर्म परिवर्तन का कुचक्र चला रहे थे। पुराण पन्थी हिन्दुओ के पास पादरियों और मौलवियों के

> **एक भयंकर चेतावनी**
>
> एक सर्वे के अनुसार यदि देश मे हिन्दुओ को जनसख्या का ह्रास होता रहा, तो ऐसी गम्भीर स्थिति मे न तो कोई 'राम बोला' होगा और न गीता वाला ही होगा। सर्वत्र हरा पश्चम ही लहराता दिखाई देगा। देश 'दारुलइस्लाम' बन जायेगा और चारो ओर अजाने सुनाई देने लगेगी।

विरोध का साहस नही था। इन दो मोटे चूहो से बडा खतरा पैदा हो रहा था।

यह सिद्धान्त तो सभी जानते है कि क्रिया के बाद प्रतिक्रिया होती है। खेद है कि 'प्रतिक्रिया' का अर्थ साधारण लोग नही जानते। इन विदेशी मजहबो, पन्थो के आक्रमणो को रोकने के लिए एक महान् 'प्रत्याकमण' (प्रतिक्रिया) की आवश्यकता थी। महर्षि दयानन्द ने इन पर प्रत्याक्रमण करते हुए सत्यार्थ प्रकाश के 13वे तथा 14वे समुल्लास द्वारा जो बौद्धिक प्रत्याक्रमण किया, तो इन दोनो मजहबो के प्रचारको तथा बुद्धिजीवियो मे हलचल मच गयी। अब ये अपना मुह चुराने लगे। इन्हे ऐसी आशा ही नहीं थी कि इन हिन्दुओ मे कोई ऐसा नर-नाहर भी है, जो हमारे घर मे घुसकर, हमारे ही मजहबी ग्रन्थो की पोल खोलकर हमे ही अन्दर से नगा कर देगा।

इधर महर्षि दयानन्द ने दोहरा वार किया। एक ओर इनकी मजहबी किताबो व सिद्धन्तो की कमजोरिया बतायी, तो दूसरी ओर उन्होने किन्ही भी कारणो से मुसलमान या ईसाई बने हिन्दुओ को वापस घर लौट चलने का आन्दोलन चलाया। इस 'वापस घर लौट चलो' को शास्त्रीय भाषा में 'शुद्धि' कहा गया। गुरु रामदास समर्थ के महान शिष्य वीर शिवाजी के पश्चात् महर्षि दयानन्द ही ऐसी

महान् विभूति थे कि जिन्होने एक नवमुस्लिम को अग्नि के सम्मुख दीक्षा देकर उसे 'अलखधारी' नाम देकर पुन: हिन्दू धर्म मे दीक्षित कर दिया। भारतीय इतिहास मे महर्षि दयानन्द का यह प्रत्याक्रमण सुनहरे अक्षरो मे लिखा जायेगा। उल्लेखनीय है कि वीर शिवाजी ने भी निम्बालकर को मुस्लिमो द्वारा भ्रष्ट कर देने के बाद पुन: गंगाजल छिडककर उसे पुन: अपनी बिरादरी औरा सेना मे प्रविष्ट कर लिया था। देश का दुर्भाग्य रहा कि जोधपुर के फेज उल्ला खान के षड्यन्त्र तथा वैश्या के षड्यन्त्र के कारण 59 वर्ष की आयु मे ही महर्षि दयानन्द को अपना यह शरीर छोड़ना पडा। इसके उपरान्त आर्यसमाज के कर्णधारो मे निराश नही आयी और स्वामी श्रद्धानन्द ने पुन: 'शुद्धि सुदर्शन चक्र' चलाना आरम्भ किया। काग्रेस के कोकोनाडा अधिवेशन मे गाधीजी के सम्मुख जब दोनो मुस्लिम नेताओ ने अछूतो के उद्धार के लिए आधे-आधे दलितो को मुस्लिम बना लेने की योजना प्रस्तुत की, तब तत्कालीन काग्रेस के कर्णधार तथा आर्य नेता स्वामी श्रद्धानन्द ने इसे भयकर कुचक्र कहा। गाधीजी को इस खतरे से सावधान किया, परन्तु जब गाधजी भी नही माने, तब स्वामी श्रद्धानन्द तत्काल काग्रेस छोडकर 'शुद्धि' कार्य मे लग गये।

स्वामी श्रद्धानन्द ने राजस्थान, हरियाणा, सौराष्ट्र आदि के लाखो नवमुस्लिमो मे, मलखानो को शुद्ध कर समृह के समूह के रूप मे वापस हिन्दू जाति मे मिला लिया। यहा हम समाज शास्त्रीय दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण बात कहना चाहते है। शुद्धि कार्य के दो अग हैं। एक, वैयक्तिक तथा सामूहिक। सामूहिक रूप से शुद्ध किये हुए समूह मे पारिवारिक और सामाजिक जीवन तथा सगठन को कोई बाधा नही आती है। किन्तु वैयक्तिक या एक व्यक्ति की शुद्धि कर लेने से उस व्यक्ति के सम्मुख अनेक समस्याये खडी हो जाती है। इस हिन्दू समाज की हाजमा शक्ति अभी भी इतनी कमजोर है कि व्यक्तिगत रूप से किसी एक पुरुष या स्त्री की शुद्धि कई बार पारिवारिक विघटन की स्थिति पैदा कर देती है और निराशा हाथ लगती है। ऐसी स्थिति मे हमे यहा और भी उदारता का परिचय देना होगा। इस समस्या पर अभी भी हिन्दू समाज को गम्भीर रूप से विचार करने की आवश्यकता है, अन्यथा समस्या और भी जटिल हो जायेगी।

आज 'शुद्धि सुदर्शन चक्र' के संचालन की अत्यधिक आवश्यकता है। सम्प्रति, भारत का पूर्वोत्तर भाग अधिकाश ईसाई बहुल हो गया है। ये ही लोग 'पृथक नागालैण्ड' की माग कर रहे हैं। इधर, भारत का समुद्री तट, अर्थात् तीनो ओर के मछुहारो मे अधिकाश ईसाई मत मानने वाले बन गये है। अत: आवश्यकता इस बात कि है कि शुद्धि चक्र की गति तेज की जाये। हिन्दु धर्माचार्यो को इस ओर पर्याप्त ध्यान देकर समाज की हाजमा शक्ति बढाने का प्रचार करना पडेगा। यद्यपि कुछ राज्यो में धर्मविधेयक कानून लागू है, परन्तु वहा कुछ ठोस काम नहीं हो रहा है। आर्य समाज तथा कुछ हिन्दू निष्ठ सगठन इस ओर कार्य कर रहे हैं, परन्तु देश की वर्तमान जनसख्या को देखते हुए ये सारे प्रयत्न ऊट के मुह मे जीरा के समान है। शुद्धि आन्दोलन पर्याय राष्ट्रोत्थान आन्दोलन चलाये जाने की बहुत बडी माग है।

❑❑

अध्याय-13

बिछुड़े हुओं का मिलाप

—स्व. महाशय बिहारीलाल जी

जब राजपूत जाट गूजर आदि ने मुगलो का मुकाबला किया और हार गये, तो मुगलो ने इनसे कहा कि तुम मुसलमान बन जाओ, नहीं तो तुम्हारा वध कर दिया जायेगा। इस तरह जिन ब्राह्मणों ने व्यवस्था दी, और ऐसी युक्ति बताई कि हिन्दू मुसलमान न हो सके। मुगलो ने सबके साथ एक-सा व्यवहार किया, और उन को भी मुसलमान बनना पडा। लेकिन उन सबने अपने नाम और कुलरीति हिन्दूआना रक्खी, यह ध्यान रखते हुए कि जब चाहेगे हिन्दू हो जायेगे। आप देखेगे महरोली (सूबा दिल्ली) के करीब बहुत से गौड ब्राह्मणो के गाव है जो मुसलमान है। इसी तरह अलवर स्टेट की तरफ मेवात है। आगरा की तरफ मलकाने राजपूत, मूले गूजर, मूले जाट हैं। अजमेर की तरफ कायम खानी है। चूकि बनिये, कायस्थ आदि से मुकाबला नही हुआ, इसलिए वह मुसलमान नहीं हुए। मगर हिन्दुओ की गलती देखो कि यवनो का राज्य बदलने पर भी उन्हें अभी तक न मिला सके।

हिन्दुओ मे आर्यसमाजी, सनातन धर्मी, जैनी, ब्रह्मसमाजी, देवसमाजी भिन्न-भिन्न सिद्धान्तो को मानते है, लेकिन सब का रोटी बेटी का व्यवहार है। मजहब बदलने मे रोटी बेटी का व्यवहार नहीं बदलता, मुसलमानो मे भी शिया, सुन्नी, मिरजई आदि बहुत से फिर्के हैं। हिन्दू मजहब नहीं, बल्कि जो भारत मे रहकर भारत माता से प्रेम करे, वह हिन्दू है, जैसे जर्मनी के रहने वाले को जर्मन, अफगानिस्तन के रहने वाले को अफगान, इसी तरह हिन्दुस्तान मे रहने वाले को हिन्दू कहते है। हिन्दुस्तान का अर्थ है, हिन्दुओ के रहने का स्थान, अत. इसमे रहने वाले सब हिन्दू है।

सरसैय्यद अहमद खान ने भी कहा है कि हम राजनीति की दृष्टि से हिन्दू हैं, इस वजह से कि हम भारत मे रहते है। अफगानिस्तान के लोगो को अफगान कहते हैं, उनको हिन्दुस्तानी नहीं कह सकते, इग्लैण्ड के लोग इंगलिस्तानी नहीं कहलाते हैं, बल्कि अग्रेज कहलाते हैं। इसी तरह हम हिन्दू कहलाये। हिन्दू कोई मजहब नही है, कौमियत है। इकबाल साहब ने कहा है—

यूनानो मिश्र रुमा सब मिट गये जहां से।
बाकी मगर है अब तक नामों निशां हमारा॥

इसका मतलब क्या है—कभी सोचा है, यूनान, मिश्र, रूम सब उसी जगह कायम हैं, हां उनका मजहब, यानी धर्म ओर उनकी पुरानी सभ्यता मिट गयी। लिहाजा उसके अन्दर खास खूबी है, जिस कारण से इकबाल साहब ले कहा है कि—

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नही हमारी।
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जमां हमारा॥

भारतवर्ष का झण्डा भगवे रग का रहा है। भारतवर्ष मे हिन्दू जब मरता है, जला दिया जाता है, आग का रग भगवा होता है, झण्डे का रग भगवा इसलिए बनाया है कि आदमी यह समझ ले कि हमने अपने निजी लाभ को आग मे जला दिया है।

इस्लाम मे तो यह कहा है कि मजहब से बुद्धि का कोई सम्बन्ध नहीं। यदि मजहबो मे नेकी की शिक्षा न हो, तो कोई मजहब नही फैल सकता। यदि सब मजहबों से मूर्खता की बाते निकल जाये, तो हिन्दू धर्म शेष रह जाता है। शास्त्रो का वचन है कि जिन बातों से देश और जाति के सब मनुष्यो का भला होवे वही धर्म है।

हम तो चाहते हैं कि देश से जाति-पाति का प्रश्न उठ जाये। जो बढई का काम करे, वह बढई कहलाये, जो कपडे का काम करे, वह जुलाहा कहलाये, जो शिक्षा दे वह अध्यापक कहलाये।

❑❑

प्रतिज्ञा।

1 **मैं आज से सदा आर्य हिन्दू धर्म पर दृढ़ रहूगा।**

2 **मैं आज से सदा वेदाज्ञा का पालन करूंगा।**

3 **मैं आज से गौ और विद्वानों का मान तथा उनकी रक्षा करूंगा।**

4 **मैं आज से अभक्ष्य (गो मांसादि) कभी भक्षण न करूंगा।**

5 **मैं आज से प्रातः-साय दोनों समय परमेश्वर की आराधना (सन्ध्यादि) किया करूंगा।**

6 **मैं आज से परस्त्री को माता-बहिन और पुत्री समान समझूंगा।**

7 **मैं आज से कभी असत्य नहीं बोलूगा।**

8 **मैं आज से चोरी न करूंगा।**

9 **मैं आज से किसी निरपराधी को कष्ट न दूंगा।**

10 **मैं आर्य धर्म में शिक्षित होने के पश्चात् यदि मुझ पर कोई आपत्ति भी आ जाये, तो उसका सामना दृढ़ता से करूंगा और सत्य सनातम वैदिक धर्म को कभी न छोड़ूगा।**

अध्याय-14

हिन्दू भाइयो, ज़रा सोचिये

मुगलो से संघर्ष करते हुए, महाराणा प्रताप और वीर शिवाजी ने घोर कष्ट और मुसीबते झेलीं। मुस्लिम शासकों द्वारा, बंदा वीर बैरागी के शरीर के मास को लोहे की गरम-गरम सलाखो द्वारा नोचा गया। भाई मतिदास के शरीर को लकडी के शहतीर की तरह आरे से चीर दिया गया। गुरु तेग बहादुर जी के शीश को तलवार से काट दिया गया। गुरु गोविन्द सिह जी के नन्हे बच्चों को दीवार मे चिनवा दिया गया। परन्तु इतने अत्याचारो, इतनी घोर हृदय-विदारक यातनाओ को सहकर भी उन धर्मवीरो ने अपना महान् हिन्दू धर्म नहीं छोड़ा। फिर हम उनके अनुयायी अपना धर्म क्यो छोडे ? आइए हम सभी प्रण करें—

जान भी दे देंगे हम, नहीं धर्म छोड़ेंगे कभी।
हिन्दू हैं, हिन्दू धर्म की लाज रखेंगे सभी।

आपको पता होना चाहिए कि मुसलमानो मे पठान वर्ग के लोग कभी अपनी लडकी का विवाह जुलाहा वर्ग के मुसलमानो से नही करते। इस्लाम मे 62 फिरके है (कुछ विद्वानो के अनुसार तो इन फिरको की सख्या 500 तक है)। उनमे कई, दूसरो से अपने को श्रेष्ठ मानते हैं, और उनमे रोटी-बेटी के सम्बन्ध नहीं होते। इतना ही नहीं, उनके कब्रिस्तान भी अलग-अलग है। पाकिस्तान मे अहमदियो को गैर-मुस्लिम करार दिया गया है। आये दिन लखनऊ मे शिया-सुन्नी लडते है। ईराक-ईरान जैसे मुस्लिम देश परस्पर कट्टर शत्रु हैं। जो लोग हरिजनो से मुसलमान बने, उन्हे 'मुसल्ली' का नाम देकर एक अलग वर्ग बना दिया गया। उनसे भी रोटी-बेटी का सम्बन्ध नहीं किया जाता।

इसलिए यदि आप समानता को पाने के लिए मुसलमान बन रहे है, तो उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर, ऐसी भूल कभी भी न कीजिये।

इस्लाम धर्म में नारी की घोर दुर्दशा

(i) हिन्दू धर्म मे नारी पूज्य है—मातृशक्ति है, देवी है, अर्धाङ्गिनी है। परन्तु इस्लाम धर्म मे नारी-स्वातन्त्र्य पर इतना अकुश है कि वहा नारियों को आयु भर बुर्के मे कैद रहना पडता है।

(ii) **इस्लाम में तलाक का खतरनाक विधान—**मुसलमान बनने पर किसी वक्त भी आपकी बहन-बेटी को उसका पति केवल तीन बार 'तलाक-तलाक-तलाक' कहकर उसे छोड सकता है। क्या मुसलमान बनकर आप तलाक के इस खतरनाक नरक मे अपनी बहनो-बेटियों को धकेलना चाहते हैं ?

हिन्दू धर्म पूर्ण वैज्ञानिक एवं तर्क संगत

हिन्दू (वैदिक) धर्म विज्ञान के सिद्धान्तो पर खरा उतरता है। हमारा धर्म पृथ्वी को गोल बताता है, जबकि कुरान और बाइबल मे पृथ्वी को चपटी बताया गया है। इससे यही सिद्ध होता है कि केवल वेद ही ईश्वरीय ज्ञान है, जो सच्चा और सही है। यदि कुरान और बाइबल खुदा का कलाम होते, तो पृथ्वी को गोल क्यो न बताते, जो एक वैज्ञानिक तथ्य है। और अब तो चन्द्रमा से लिये गये चित्रो से भी बच्चा-बच्चा उपरोक्त वैज्ञानिक तथ्य से परिचित हो चुका है कि पृथ्वी चपटी नहीं, अपितु गोल है।

हिन्दू धर्म किसी व्यक्ति पर निर्भर नहीं

हिन्दू (वैदिक) धर्म मे से महर्षि कणाद, गौतम, राम, कृष्ण आदि को निकाल दे, तो भी कुछ फर्क नही पडता। परन्तु ईसाई मजहब से ईसा मसीह को और इस्लाम से हजरत मुहम्मद को निकाल दे, तो उन मतो का अस्तित्व ही नही बचेगा, क्योकि उन मतो के अनुसार उपरोक्त व्यक्तियो पर ईमान लाये बिना स्वर्ग मिल ही नही सकता।

इसलिए, ऐसे धर्म को मत छोडिये, जिसमे आपकी पहुच सीधी परमपिता परमात्मा तक है, बीच मे किसी विचौलिये, दलाल, पीर, पैगम्बर आदि की सिफारिश की कतई जरूरत नही।

हिन्दू धर्म ही सभी धर्मो का मूल

ससार के सब ऐतिहासिक विद्वान् इस बात पर एक मत है कि ससार के पुस्तकालय मे सबसे प्राचीन पुस्तक वेद है। इससे सिद्ध होता है कि वेदो मे वर्णित जो भी सत्य सिद्धान्त, बाद के काल मे प्रचलित हुई अन्य धर्म की पुस्तको मे है, वे सब वेदो के है और उन्ही से लिये गये है। इस तथ्य को जार्ज बर्नाड शॉ ने भी स्वीकार करते हुए लिखा है–"**There is only one religion though**

❑❑

| ज्ञान कण |

भूल करने में पाप तो है ही, परन्तु उसे छिपाने मे उससे भी बडा पाप है।

❑❑

सत्य का स्रोत भूलों के बीच से होकर बहता है।

❑❑

अपनी भूल अपने ही हाथों सुधर जाए, तो यह उससे भी कहीं अच्छा है कि दूसरा कोई उसे सुधारे।

अध्याय-15

वैदिक धर्म ही क्यों?

—सुरेन्द्र कुमार गुप्त

आज के युग मे जब-जब भी धर्म शब्द पर वार्ताए होती हैं, तो प्राय: यह कहा जाता है कि सारे धर्म एक ही रास्ते की ओर ले जाते हैं, अत: सारे धर्म अच्छे हैं। नित्य प्रति होने वाली घटनायें इस तथ्य की कतई भी साक्षी नहीं देतीं कि सारे धर्म एक जैसे हैं। यदि सारे धर्म अच्छे होते, तो संसार से सारे लड़ाई झगडे कब के खत्म हो चुके होते। कौन नहीं जानता कि इस्लाम की लहर एक हाथ मे कुरान व एक हाथ में तलवार लेकर मोराक्को से (लेकर) सब कुछ तहस-नहर सकती हुई चल रही है। केवल इसी विचार पर कि कुरान मे जो कुछ लिखा गया है, वही सत्य है। यदि कहे तैमूर लिग के शब्द कि 'दुनिया के सारे ग्रन्थालय जला डालो क्योकि यदि वे कुराने से पहले लिखे गये हैं, तो बाद में कुरान मे उतरी खुदा की जबान मे आ ही गये हैं, अत: उनकी कोई जरूरत नहीं है। तथा यदि कुरान के बाद मे लिखे गये हैं, तो भी उनकी कोई जरूरत नहीं है, क्योकि कुरान मे सब कुछ पहले ही लिखा जा चुका है। इसलिए सभी ग्रन्थ जला डालो' परिणामस्वरूप नालन्दा का ग्रन्थालय सुनते हैं छ: माह तक जलता रहा। इसी प्रकार प्राचीन काल से लेकर कुछ काल पूर्व तक कैथोलिक भाइयो ने प्रोटेस्टेट चर्चो को इसलिए जला डाला, क्योकि वे मजहब को अन्धविश्वास के रूप मे नहीं देखकर, उदार दिल होकर महात्मा ईसा के उदार दृष्टिकोण को अपना रहे थे।

यह बात तो उन धर्मों की हुई, जो भारत से बाहर पैदा हुए। अब जरा भारत मे पैदा हुए धर्मो (मजहबो, पन्थो) की ओर दृष्टि डाले। प्रत्येक ही स्वय को ऊंचा व दूसरो को नीचा कहता है। मनुष्य का आत्मा उद्यपि सत्य असत्य का निर्णय सविवेक से करता है, तथापि जीवन में सचित सस्कारो के वश किसी एक पन्थ से बधकर उसे ही धर्म का चोला पहूना देता है। तथा रीति-रिवाजो को ही कहने लगता है कि हमारे (धर्म) में यह चलता है, यह नहीं चलता है इत्यादि। ऋषियों की कामना सुनकर मनु महाराज ने धर्म का उपदेश दिया—"जिस तत्व को धारण करने से इस लोक (जीवन) मे विशेष सुख, अर्थात् स्वर्ग की प्राप्ति होती है, वह तत्व ही धर्म है।" जिस प्रकार सर्दी से व्याकुल मनुष्य यदि अग्नि के पास आ जाये, तो शीघ्र ही उसका शीत दूर हो जाता है, उसी प्रकार धर्म अर्थात् सत्य के पास पहुचा हुआ मनुष्य भी जीवन मे विशेष सुख पा लेता है। (वर्तमान युग मे स्वामी दयानन्द सत्य के निकट होने के कारण विख्यात हो गये।)

आगे धर्म की व्याख्या करते हुए मनु महाराज ने धर्म के दस लक्षण बताये हैं--घृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय-निग्रह, घी, विद्या, सत्य व अक्रोध। इन लक्षणो मे वर्तमान के तथा-कथित धर्मो के कहीं भी दर्शन नहीं होते, किन्तु उन जीवन मूल्यो के दर्शन होते हैं, जिनसे मानवता और केवल मानवता ही झलकती है। मनुष्य इन लक्षणो को धारण कर पूर्ण रूप से वैदिक धर्मी बन सकता है। न कि हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई इत्यादि।

यह अपनी राय (मत) ही विभिन्न पथ कहलाते हैं, जिन्हें गलत व्याख्या से धर्म शब्द की संज्ञा दे दी गयी है। वैदिक मान्यता है कि जैसा खाआगे अन्न, वैसा ही होगा मन। मन के आधार पर ही शरीर कार्य करता है। जैसा हम आहार करेगे, उसी के अनुरूप हमारा मन हो जायेगा। अत: यदि कल्याण चाहते हो, तो वेद मे वर्णित वैदिक धर्म ही ग्रहण करने योग्य है। ❑❑

अध्याय-16

वीर सावरकर को शुद्धि कार्य पसन्द था

—इन्द्र देव गुलाटी, बुलन्दशहर

स्वातन्त्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर प्रबल हिन्दू सगठक थे। 20वी शताब्दी मे वे सबसे बडे हिन्दू नेता बने। उन्हे शुद्धि कार्य बहुत पसन्द था। वे इसे महत्त्व देते थे। वे हिन्दू धर्म मे वापस आने वालो को उचित महत्त्व व सम्मान देने के पक्षपाती थे।

अपनी मृत्यु (26 फरवरी 1966 ई) से पूर्व उन्होने अपनी शेष जमा राशि 5000/ रुपये (जो इस समय लगभग डेढ लाख रुपये बैठेगी) शुद्धि सम्बन्धी कार्यो पर व्यय करने के लिए दी थी। इससे स्पष्ट है कि उन्होने शुद्धि को अत्यधिक महत्त्व दिया था।

उन्होने अपने जीवनकाल मे और अण्डमान जेल मे रहते हुए सदैव ध्यान रखा कि हिन्दुओ का धर्मान्तरण न हो, बल्कि हिन्दू धर्म छोडकर जा चुके अपने भाई-बहनो को समझा-बुझाकर वापस हिन्दू धर्मावलम्बी बनाया जाये।

साढे चार लाख मलकाना राजपूत मुस्लिमो का शुद्धि समारोह आयोजित करके हिन्दू धर्म मे वापस लाने का कीर्तिमान बनाने वाले अद्वितीय महापुरुष स्वामी श्रद्धानन्द थे, और दिसम्बर 1922 मे आगरा मे उन्हे हिन्दू धर्म मे वापस लाने मे सफलता प्राप्त की।

फरवरी 1923 मे भारतीय हिन्दू (आर्य) शुद्धि सभा की दिल्ली मे स्थापना की।

23 दिसम्बर 1926 को एक क्रूर मुस्लिम हत्यारे अब्दुल रशीद की गोलियो से वीरगति पाकर रक्तसाक्षी पडित लेखराम की पक्ति मे सम्मिलित हो गये।

उस समय 1926 ई मे इस शवयात्रा मे पाच लाख लोग सम्मिलित थे। उस समय तक इतनी विशाल शवयात्रा किसी भी नेता की नही निकली थी।

जब तक भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा रहेगी।
अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द का नाम रहेगा॥

| ज्ञान कण |

जिसका निश्चय दृढ और अटल है वह दुनिया को अपने साँचे मे ढाल सकता है।

सच्ची से सच्ची और अच्छी से अच्छी चतुराई निश्चय (फैसला) है।

अध्याय-17

सच्ची शान्ति की ओर

—ओमप्रकाश सपरा

भारत की अवनति के प्रमुख कारण

1. मूर्ति पूजा, 2. फलित ज्योतिष, 3 मिथ्या अहिंसावाद, 4. जगत् मिथ्यावाद, 5. अवतारवाद, 6. आपसी फूट, 7. साधुओं की फौज।

जो लोग किसी लोभ या भ्रम से धर्मभ्रष्ट हो गये थे, उनके लिए शुद्धि का रास्ता स्वामी दयानन्द जी ने दिखलाया। एक मुसलमान की इच्छा पर देहरादून मे उसे शुद्ध करके पुन. हिन्दू बनाकर उसे अपने धर्म को पहचानने व रक्षा करने के सक्षम बनाया।

कुरान का उपदेश ससार मे 1372 वर्ष से. ईसा का उपदेश 2006 वर्ष से और मूसा का उपदेश (तौरेत) यहूदियो को 3510 वर्ष पूर्व मिला। पर, सबसे पूर्व ईश्वर ने जो ज्ञान मनुष्यो को दिया, उसी ज्ञान का नाम वेद है। इसे मैक्समूलर ने अपनी पुस्तक 'साईस ऑफ रिलीजन' मे स्पष्ट रूप से स्वीकारा है। वेद अनादि ज्ञान है।

उस समय जाति-प्रथा के कारण भारती समाज बुरी तरह बटा हुआ था। हिन्दू जाति हजारो कल्पित जातियो, उपजातियो मे विभक्त थी। प्रत्येक का खान-पान, रीति-रिवाज भिन्न थे। ऋषि दयानन्द ने जन्म पर आधारित इस जाति प्रथा को समूल नष्ट करने के लिए जन-साधारण और विद्वानो व नेताओ को प्रेरित किया। इसी के फलस्वरूप हिन्दुओ मे अन्तर्जातीय सहभोज एव अन्तर्जातीय विवाह होने लगे व कई सामाजिक सस्थाए यह काम करने मे जुट गयीं।

जाति प्रथा के कारण तथाकथत उच्च जाति के लोगो का व्यवहार दलित व निम्न जाति के लोगो के साथ अत्यन्त रूखा, कठोर व अमानवीय था। इस असह्य व्यवहार के परिणामस्वरूप दलित व पिछडे लोग ईसाई व मुसलमान बन रहे थे। ऋषि दयानन्द ने इस अमानवीय व्यवहार के विरुद्ध लोगो को सचेत किया और निर्देश दिया कि आपस मे खान-पान, छूत-अछूत आदि मे भेदभाव तत्काल समाप्त होना चाहिए। कुछ लोग इन प्रगतिशील कदमो का विरोध कर रहे थे, पर अधिसख्य समझदार लोग काफी उद्वेलित व उत्साहित महसूस कर रहे थे, मानो किसी देव पुरुष ने मृत हिन्दू समाज को नवजीवन प्रदान कर दिया हो। ऋषि दयानन्द अपूर्व विद्वता के स्वामी, निर्भीक, ब्रह्मचारी, स्वदेशी-प्रेमी, सहिष्णुता के प्रतीक, अपूर्व योगी, आदित्य व सत्योपदेशक थे।

आर्यसमाज मनुष्य मात्र के बालको व बालिकाओ को बिना किसी भेदभाव के समान रूप से विद्या प्राप्त करने का अधिकारी मानता है और विद्यालय में पढाई की समाप्ति पर जिस-जिस विद्यार्थी का जो-जो वर्ण उनकी योग्यतानुसार उनका आचार्य निश्चित करे, वह-वह उनका 'वर्ण' मानता है, चाहे उनके पिता का कुछ भी वर्ण हो।

❑❑

अध्याय-18

एक मार्गदर्शन

इस समय एक काम और है और वह है ईसाई मुसलमानो को वैदिक धर्म की शिक्षा देना। इस काम को सम्मति रूप मे और व्यवस्था रूप मे करे, तो वृद्धि कर ही सकते है, किन्तु इसमे जो आने, जाने, मिलने, मिलाने का कार्य है, यह काम बलपूर्वक आरम्भ करना चाहिए, जो वैदिक धर्म मे सम्मिलित होना चाहे, उसे कभी निराश न करना चाहिए।

ईसाई अपने मत का प्रचार उन बिरादरियो मे करते है, जिनमे शिक्षा न्यून है और जिन्हे पौराणिक धर्मियो ने किसी कारण वश अछूत वा बहिष्कृत माना था। महर्षि के प्रताप और आर्यसमाज के प्रचार तथा स्वराज्य प्राप्ति से, कोई भी अछूत नही रहा है। आर्यसमाजियो को ईसाई होने वालो को रोकना और जो हो गये है, उनको पुन: वैदिक धर्मी बनाने का व्रत लेना चाहिए। यह व्रत युवक ही ले सकते है।

इस कार्य के करने से गोरक्षा का मार्ग सर्वथा सरल हो जायेगा। इसलिए इस मिलाप कार्य मे प्रत्येक वैदिक धर्मी को तन, मन और धन से सहायता करनी चाहिए।

❑❑

| ज्ञान कण |

संसार मे जितने प्रकार की प्राप्तियॉ हैं, शिक्षा सबसे बढ़कर है।

❑❑

सदाचार और निर्मल जीवन सच्ची शिक्षा का आधार है।

❑❑

युवको को यह शिक्षा मिलना बहुत जरूरी है कि वे अपने सामने सर्वोत्तम आदर्श रखे।

❑❑

शिक्षा जीवन की तैयारी का शिक्षणकाल है।

❑❑

हमारी शिक्षा तब तक अधूरी ही रहेगी, जब तक उसमें धार्मिक विचारों का समावेश नहीं किया जाएगा।

अध्याय-19

ON THE BIBLE

—आर्यसमाज, देहरादून

Of late our Christian brethren have been very active in weaning Hindus, especially Harijans, from the faith of their ancestors. It is not the truth of the Christian doctrine so much as the lure of the coin that is enticing the poor to leave the fold of their forefathers.

Missionaries are imported into India to save our heathen country ❑❑

चाहिए ऐसा भारतवर्ष

—विनोद चन्द्र पाण्डेय

जहाँ हो न्याय नीति, सद्धर्म, जहाँ हो सम्पादित सत्कर्म।
जहाँ हो नैतिकता का मूल्य—जहाँ से मिटे अनीति अधर्म।
जहाँ हो समता का साम्राज्य, जहाँ हो जन-जीवन आदर्श।
जहाँ हो जन-जीवन आदर्श, चाहिए ऐसा भारतवर्ष।।
जहाँ हो समता का साम्राज्य, जहाँ हो जन-जीवन आदर्श।
चाहिए ऐसा भारतवर्ष।।
जहाँ गूंजे कविता, संगीत, जहाँ विकसित हो कला पुनीत।
जहाँ हो श्रेष्ठ ज्ञान-विज्ञान—जहाँ हो शिक्षा आशातीत।
सभ्यता-संस्कृति जहाँ विशिष्ट, जहाँ उपलब्धि-पूर्ण हर वर्ष।
चाहिए ऐसा भारतवर्ष।।
जहाँ हो नहीं कहीं आतक, जहाँ सब रहें निडर निःशक।
जहाँ हो कहीं न हिसा व्याप्त—जहाँ विग्रह का हो न कलंक।
जहाँ हो करुणा ममता, दया, जहाँ हो सफल विचार-विमर्श।
चाहिए ऐसा भारतवर्ष।।
जहाँ हो न्यायालय का मान, जहाँ हो विधि-विधान का ध्यान।
जहाँ हो नहीं व्यर्थ व्यवधान—समस्याओ का जहाँ निदान।
जहाँ हो सबमें सहमति स्वयं, जहाँ हो आशामय निष्कर्ष।
चाहिए ऐसा भारतवर्ष।।

सी-10, सैक्टर-जे, अलीगंज, लखनऊ

अध्याय-20

कविताएं

—हरबंसलाल कोहली

(1)

उठो उठो ऐ आर्य वीरो, ओ३म् का झण्डा लहरा दो,
वेदो का सदेश सुनाओ, भूले भटके लोगो को।
वेदो का सूरज चढ आया, सब दुनिया को बतला दो ॥१ ॥
राम, कृष्ण और गौतम की, शिक्षा का तुमको ध्यान रहे।
घर घर मे हो हवन-यज्ञ, वेदो का पढ़ना सिखला दो ॥२ ॥
दूर करो सब छूत-छात, और विधवाओ के सकट को।
ऋषि दयानन्द के भक्तो, शुद्धि का डका बजवा दो ॥३ ॥
वीर प्रताप शिवा, वेरागी के जौहर दिखलाओ तुम।
वीर हरी सिह नलवे जेसी, धाक जहा पै बिठला दो ॥४ ॥
जात-पात और छूत- छात के, झगडे एकदम बन्द करो।
दयानन्द ने कहा है, जो कुछ, उसको करके दिखला दो ॥५ ॥

(2)

देश के नौजवा सो रहे है अभी।
जागिये और उनको जगा दीजिये ॥१ ॥
अपने बच्चो को शिक्षा भी दो धर्म की।
धर्म पर उन को मरना (चलना) सिखा दीजिये ॥२ ॥
जिन्दगी कौम की चाहते हो अगर।
तो छुआ-छूत का गढ गिरा दीजिये ॥३ ॥
एक हो जाओ मिल करके छोटे बडे।
देश मे प्रेम गगा बहा दीजिये ॥४ ॥
जो तुम्हारे हैं उनको जुदा मत करो।
गैर आये तो अपना बना लीजिये ॥५ ॥
हर किसी मे न बेबात झगडो कभी।
बात पर शौक से सर कटा दीजिये ॥६ ॥
लाज है गर मुसाफिर दयानन्द की।
नाद वेदों का घर घर बजा दीजिये ॥७ ॥

(3)

दयानन्द ने गर बजाई न होती,
बे वेदार हरगिज खुदाई न होती।
न बातिल परस्ती जमाने से मिटती,
जो वेदों की बशी बजाई न होती।
निशा राम का कृष्ण का मिट चुका था,
ऋषि ने जो हल-चल मचाई न होती।
न इस्लाम के ढोल की पोल खुलती,
जो स्वामी ने हिम्मत दिखाई न होती।
न बिलबन्द होता कभी बाइबिल का,
खुदा वन्द की जग हसाई न होती।

(4)

आर्य समाज लाज देश की बचायेगा।
और यहा देश को बचाने कौन आयेगा॥
देश मे ईसाइयत का हो रहा प्रचार है।
गिरती दीवारो को सहार दे उठायेगा॥१॥
ऋषियो की सभ्यता को कर रहे बदनाम जो।
राम और कृष्ण का मिटाना चाहे नाम जो।
उनका ही नाम इस देश से मिटायेगा॥२॥
लूटते है लाज आज काटते है चोटिया।
धर्म से गिरा रहे है देकर कपडे रोटिया।
पतितों को शुद्ध कर आर्य बनायेगा॥३॥

(5)

जद चन चढ़ेया गुजरातों हनेरा गुप दूर हो गया।
दयानन्द स्वामी नाम धराया, वेदा दा जिस नाद बजाया।
हर पाये चानणा पाया॥ हनेरा गुप
विधवा रौंदी ते कुरलांदी, दर-दर दे सी धक्के खादी।
दुष्टा तो आन छुडाया॥ हनेरा गुप

हाहाकार अछूतां पाई, मुस्लिम ते बन गये ईसाई।
फिर मुड के हिन्दू बनाया॥ हनेरा गुप
धन और जननी जिसने जाया, जिसने सुत्रा देश जगाया।
कई जन्मां दा भरम मिटाया॥ हनेरा गुप
इक प्रभु दी पूजा सिखाई, ब्रह्मचर्य दी जोत जगाई।
आर्य समाज बनाया॥ हनेरा गुप

(6)

विश्वशान्ति चाहिए, तो दस नियमो को अपनाना होगा,
सब से प्रीति पूर्वक धर्म अनुसार यथा योग्य बरतना और बरतवाना होगा।
खण्डित आर्य वर्त को सम्पूर्ण आर्यवर्त बनाना होगा,
ईसाईयो और मुसलमानो को सत्यार्थ प्रकाश पढाना होगा।

चार-चार बीवियो का सिलसिला हो खत्म,
इक पत्नी को भी हो पूरा अधिकार,
कानून सबके लिए हो एक जैसा,
और सबको मिले रोजगार,
भूखे पेट न होती ईश्वर की पूजा,
देश को अनाज का भण्डार बनाना होगा।

छोटी-छोटी रियासतो के कारण विदेशी यहा थे आये,
पृथ्वी राज जयचन्द आपस मे टकराये।
आर्यो का चक्रवर्ती राज बनाना होगा,
ओर चाणक्य जैसा प्रधान मन्त्री लाना होगा।

ऊची जात और नीची जात के झगडे जो करवा रहे,
वर्ण को जात से मिलवा रहे,
वर्ण है कर्म के आधार पर, यह समझाना होगा।
जात-पात तोडक मण्डल फिर से बनाना होगा।
बिछडे भाइयो को आर्य बनाना होगा
और यज्ञ पर बैठ आचमन कराना होगा।

विदेशी धन से ईसाइयत फैलाई जा रही,
विदेशी पादरियों को वापस भिजवाना होगा।
श्रद्धानन्द को जो सच्ची श्रद्धा है देनी,
तो भारत के कण-कण में शुद्धि आन्दोलन चलाना होगा।

सत्य का बोल बाला तो होगा तभी,
जब सन्ध्या हवन का होगा प्रचार
नये मत मतातर भरे पाखण्ड से
उनका खण्डन तो करना कराना होगा।

विश्व को आर्य बनाना है, तो पुरुषार्थ को तेज करो,
अपनी अपनी छोड धर्म कार्य का दम भरो
ओ३म् का झण्डा हाथ मे लेकर बढते जाना होगा।
वेदो का संदेश हर जाति, हर देश मे पहुंचाना होगा।

❑❑

| ज्ञान कण |

सत्य की कभी हार नहीं होती। सत्य के समान दूसरा कोई तप नहीं है।

❑❑

सत्य हजार ढंग से कहा जा सकता है, फिर भी हर ढंग सच हो सकता है।

❑❑

सत्य से पृथ्वी स्थिर है, सत्य से सूर्य तपता है, सत्य ही से वायु बहता है, सब सत्य से ही स्थिर है।

❑❑

सत्य ही परम बल है। सत्य ही भगवान् है।

❑❑

सत्य का सर्वश्रेष्ठ अभिनन्दन यह है कि हम उसको आचरण में लाएँ।

❑❑

सत्य का मार्ग सुगम है।

❑❑

सत्य पर विश्वास रखना प्रत्येक मनुष्य का धर्म है। जिस मनुष्य के चित्त से विश्वास जाता रहता है, उसे मृत समझना चाहिए।

अध्याय-21

सावरकर
जन-जागरण का त्रिविध आवाहन

—डॉ. एस. एन. नवलगुंदकर

स्वातन्त्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकर एक कर्मठ व्यक्ति थे। एक ऐसे राष्ट्रवादी थे, जिन्होंने हिन्दू राष्ट्रवाद के स्वप्न को साकार करने मे अपनी समस्त शक्ति लगा दी। सेल्यूलर जले मे उन्होने हिन्दू कैदियो की, विशेषकर निम्न समझी जाने वाली जातियो के कैदियो की दयनीय अवस्था के प्रत्यक्ष दर्शन किये। उच्च वर्ग के हिन्दुओ के दुर्व्यवहार के कारण वे आसानी से धर्म परिवर्तन के शिकार बन जाते थे। सावरकर ने यह सोचा कि भारत जैसे विशाल देश मे बडे पैमाने पर होने वाले धर्म परिवर्तन से मुस्लिम जनसख्या मे तेजी से वृद्धि होगी और इसकी वजह से हिन्दू धर्म और सस्कृति का ही अस्तित्व संकट मे पड जायेगा।

विभाजित व पराजित

इतिहास से इस बात का पता चलता है कि हिन्दू इसलिए पराजित हुए, क्योकि वे विभाजित थे, भौतिक रूप से पिछडे हुए थे तथा सैन्य-शक्ति की दृष्टि से निर्बल थे। इस कारण वे चाहते थे कि हिन्दू सगठित हो, आधुनिक बने तथा सैन्य-शक्ति बने। उन्होने जाति प्रथा के उन्मूलन पर विशेष बल दिया। जन्म पर आधारित जाति व्यवस्था के दूरगामी गम्भीर परिणाम हुए। जाति व्यवस्था एक विशाल विभाजक शक्ति है और जिस हिन्दू राष्ट्र के लिए सावरकर जीवन भर सघर्षरत रहे, उस हिन्दू राष्ट्र के निर्माण के मार्ग की एक मुख्य बाधा है।

सावरकर का बौद्धिकवाद

सावरकर इस मत को पूर्णत: अस्वीकार कर देते है कि जाति का निर्धारण जन्म से होता है। यह विश्वास किया जाता है कि चारो जातिया ब्रह्मा के शरीर से उत्पन्न हुई है, जो इनकी एकता का प्रतीक है। अत: उनके मुख से उत्पन्न व्यक्ति और उनके चरणो से उत्पन्न व्यक्ति में कोई भेद-भाव नहीं किया जा सकता। ठीक उसी प्रकार कि किसी वृक्ष की सबसे ऊची शाखा तथा सबसे नीची शाखा के फल में अन्तर नहीं किया जा मकता।

अलग-अलग जातियो के लोगो का शारीरिक गठन भी लगभग एक-सा ही है। अत. जाति के आधार पर किया जाने वाला विभाजन अत्यन्त अस्वाभाविक तथा अनुचित है।

जाति का निर्धारण

इन समस्त तर्को से यह निष्कर्ष निकलता है कि जाति का निर्धारण जन्म के आधार पर नहीं होता है। सावरकर ने यह मत प्रतिपादित किया कि आरम्भ में जाति व्यवस्था जन्म पर आधारित नहीं

थी। इसका आधार व्यक्ति के गुण तथा कार्य थे। जाति व्यवस्था का उद्देश्य हिन्दू समाज मे कार्य विभाजन था। चूकि यह ''कर्म विपाक सिद्धान्त'' पर आधारित नहीं थी, अत: इसमे नमनीयता एव गतिशीलता थी। कालान्तर मे हिन्दू सामाजिक सरचना ढहने लगी और जन्म पर आधारित रूढ जाति व्यवस्था अस्तित्व मे आयी।

हममे 'पुराना मत तोडो, नया मत करो' की प्रवृत्ति इतनी बलवती है कि हम आगे बढ ही नहीं पा रहे है। हमारे अतीत का सडा-गला अश हमारे हिन्दू समाज, हिन्दू सस्कृति और हिन्दू राष्ट्र मे सडाध पैदा कर रहा है। हिन्दू राष्ट्र जीवन मे उत्पन्न इस सडांध को ही सत्य बताकर हमारे शत्रु हमे तोड़ने और मिटा देने का सुनियोजित प्रयास कर रहे हैं।''

हम कहां हैं?

अपनी कालबाह्य वर्णव्यवस्था से हम निरर्थक होते हुए भी चिपके हुए हैं। अवर्णसवर्ण, स्पृश्यता-अस्पृश्यता और जातिभेद के कारण सामाजिक विषमता शत्रुता का रूप ले रही है। सावरकर की सतर्क दृष्टि ने इस खतरे को बहुत पहले देख लिया था। जातिभेद उन्मुलक सामाजिक क्रान्ति की घोषणा करते हुए वे कहते हैं, ''हम हिन्दुओ मे जो तथाकथित जन्मजात जातिभेद का स्वरूप वर्तमान मे अवस्थित है, वह पुस्तकीय है। मद्रासी ब्राह्मण की अपेक्षा महाराष्ट्रीय चमार अधिक गौरवर्ण होता है। महारो मे चोखामेला जैसे सत और अम्बेडकर जैसे विद्वान् हुए है। उत्तर भारत मे सैकड़ो ब्राह्मण पीढियो से काश्तकारी करते हुए निरक्षर हैं। एक ओर जहां ब्राह्मण दर्जी और चमडे के जूतो की दुकान चलाते हैं, वहीं दूसरी ओर दर्जी, सुनार, चमारो और बनियो मे आई ए एस की उपाधि धारण करने वाले लोग भी है। कायस्थ जन्मत: शूद्र माने जाते है, किन्तु बगाल के विवेकानन्द, अरविन्द, पाल, घोष, बोस जैसे कायस्थ विद्वत्ता और बुद्धि में ब्राह्मणों से बहुत आगे थे। पानीपत युद्ध के सेनापति भाऊराव ब्राह्मण थे। शूद्रवश मे उत्पन्न तुकाराम परम संत थे। पाच हजार वर्ष पूर्व जो भी स्थिति रही हो, किन्तु आज जो जातिया विभिन्न रूपो में मानी जाती हैं, उनको वर्ण, गुण या कर्म की कसौटी कसने के बाद वस्तुत: कोई भी जाति भेद दिखाई नहीं देता।

समरस और समर्थ हिन्दू राष्ट्र के पुनर्जागरण के लिए सावरकरजी ने जातिभेद के जहर का अन्त अपरिहार्य माना। हिन्दू समाज भेद-भाव और भय की जिन बेड़ियों मे जकडा हुआ है, उनको तोड डालने का आहवान किया। उनका कहना था कि 'जातिभेद मिटाने के लिए किसी अनोखे उपाय की आवश्यकता नहीं है। यदि वेदोक्त बदी, व्यवसाय बदी, स्पर्श बदी, सिंधु बदी, शुद्धि बदी, रोटी बदी और बेटी बदी की बेडिया तोड दी जाये, तो हिन्दू समाज अपने हिन्दू राष्ट्र को पुन: महिमामण्डित कर सकता है और तभी हमारे राष्ट्र के विश्व वदनीय रूप का उदय होगा।

छुआछूत को कलक और सामाजिक अपराध मानते थे वीर सावरकर। उनके शब्द थे, ''जब तक हम अस्पृश्यता बनाये हुए है, तब तक हमारे राष्ट्र मे स्पृश्य और अस्पृश्य के भेदों को

उभाडकर, जाति के अनुसार प्रतिनिधित्व देकर, परस्पर कलह की आग सुलगाकर हमारे राष्ट्र की शान्ति को टुकड़े-टुकडे मे विभाजित करने मे हमारे शत्रु सफल होते रहेंगे। यदि हम अपने बीज, धर्म और राष्ट्र के सहोदर भाइयो—सभी अस्पृश्यो को—स्पृश्य बनाकर अत्यन्त सहज भाव से अस्पृश्यता को निकाल- बाहर कर दे, तो हमारे इन करोडो धर्मबन्धुओ को कौन हमसे अलग कर पायेगा।

जातिभेद से हिन्दू राष्ट्र का पराभव होता है। इसकी कटुता ने मन्दिरों, मार्गो, घरों-घरों, नौकरियो, सस्थाओं, संसद और विधानमण्डलो मे हिन्दू जाति के टुकड़े करके पारस्परिक कलह और सघर्ष उभाडकर अहिन्दुओ के आक्रमण के समय दृढ रहने की सगठित शक्ति का हिन्दू राष्ट्र मे उद्भव ही, असम्भव बना दिया है। जातिभेद का समूल नाश ही हमारे वास्तविक हिन्दू राष्ट्र के उद्धार का एकमेव अपरिहार्य साधन है। जन्म के आधार पर नहीं, व्यक्ति को उसके प्रगट गुणो के आधार पर परखा जाये। यह न भूले कि आज के चमार का लडका कल प्रधानमन्त्री हो सकता है और आज के प्रधानमन्त्री का लड़का कल चमडे का कारखाना चलानेवाला चमार हो सकता है। विधिवेत्ता डॉ अम्बेदकर चमार थे। इसीलिए यदि उनसे मृतपशुओं की खाल खीचने वाले चमारो का ही काम कराया गया होता, तो हमारा राष्ट्र एक अत्युत्तम विधिवेत्ता और राजनीति धुरंधर से वचित रह जाता। अस्पृश्यता का समूल नाश किया जाना चाहिए। अपवित्रता और अस्पृश्यता उसमे मानी जानी चाहिए, जिसमे स्वास्थ्य की हानि होती हो।''

धर्मान्तरण के कारण हिन्दू राष्ट्र को होने वाली हानि कुछ कम नहीं है। धर्मातरण को वे राष्ट्रान्तरण कहा करते थे। सावरकर जी ने स्पष्ट शब्दों मे कहा है कि ''करोडों हिन्दुओं को ईसाइयो और मुसलमानो के हाथ का खाना खाने, उनके घर मे गोमांस का टुकडा फेंके जाने और दगो के समय मुसलमानों द्वारा सैकडो हिन्दुओ के मुह मे रोटी ठूंस देने मात्र से उन्हे भ्रष्ट मान लिया गया। उनका बहिष्कार किया गया। वे पराये हो गये। इस विपदा को सहभोज के शस्त्र से काटकर गिरा देना चाहिए। रोटी खाने से किसी भी मनुष्य का धर्म भ्रष्ट नहीं होता। उससे किसी की जाति नही डूबती। जाति रक्त-बीज मे होती है, तवे की रोटी या चावल के बर्तन मे नहीं। धर्म का स्थान हृदय है, पेट नहीं। मुसलमान के साथ भोजन करने से हिन्दू-मुसलमान क्यो होगा ? मुसलमान हिन्दू क्यो नहीं होगा ?''

हम बिल्ली-कुत्ते जैसी गदे प्राणियों, भैस, घोडे, गधे जैसे पशुओं को तो छू सकते है, किन्तु अपने ही जैसे इन मनुष्यो को छू नहीं सकते।

हिन्दू शब्द का प्रयोग

हिन्दू शब्द को मुसलमानो ने हमारे लिए सर्वप्रथम प्रयुक्त नही किया है। ठेठ ऋग्वेदकाल से हमारे स्वत: के राष्ट्रीय अभिधान के नाते जिन सप्तसिधु, सिधुदेश, सिधु शब्दो का प्रयोग हुआ, उन्हीं मे से वह निकला है। उसका प्राकृत हिन्दू व हिन्दुस्तान रूप भी सिधु व सिधुस्थान इन स्वकीय

सस्कृत शब्दो से हमारी ही प्राकृत भाषाओ के व्याकरण के अनुसार नि:सृत एवं प्रसृत हुआ है। गत डेढ हजार वर्षो से तो उस प्राकृत शब्द का अविच्छिन्न परम्परा के रूप मे अपने लिए अत्यन्त अभिमान के साथ प्रयुक्त करते आये है।

वीर सावरकर प्रणीत 'हिन्दू' की परिभाषा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण

'हिन्दू' शब्द की परिभाषा के निर्णय मे बुद्धिजीवियो मे बहुत से मतभेद हैं। परन्तु अन्ततः दिल्ली उच्च न्यायालय व सर्वोच्च न्यायालय द्वारा जिस परिभाषा को स्वीकृति प्रदान की गयी, वह महत्त्व वीर सावरकर द्वारा प्रतिपादित परिभाषा को ही प्राप्त हो सका। परिभाषा इस प्रकार है—

आसिन्धु सिन्धु पर्यतः यस्य भारत भूमिका।
पितृभूः पुण्यभूश्चैव स वै हिन्दुरिति स्मृतः॥

अर्थात्—सिन्धु से लेकर समुद्र तक फैली इस भारत भूमि को जो अपनी पितृभूमि, पुण्यभूमि मानता है, वही हिन्दू है।

शुद्धि

इस सगठनासत्मक कार्य का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अग है। अपने पूर्वार्जित घर से जिन्हें दल या बल से विलग हो जाना पडा था, अपने उन रक्त व राष्ट्र बन्धुओ के सप्रायश्चित अपने पूर्व समाजकुटुम्ब मे वापस आने पर उन्हे ममत्व के साथ अपनाना महत्त्वपूर्ण अंग है। शुद्धि में वह शक्ति है, जिस को अगीकार करने से मुसलमानो व ईसाइयो आदि का असख्य अन्य धर्मियों (हिन्दुओं) के भ्रष्ट्री करने का धधा ठप हो जाना सुनिश्चित है।

❑❑

| ज्ञान कण |

कर्म ही पूजा है और कर्त्तव्यपालन करना भक्ति है।

❑❑

'अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्।' किये हुए शुभ और अशुभ कर्मो का फल अवश्य भोगना पड़ता है।

❑❑

अतीत में जैसा भी कर्म किया गया है, भविष्य में वह उसी रूप मे उपस्थित होता है।

अध्याय-22

धर्मान्तरण का इतिहास तथा जाति प्रथा

—विनायक दामोदर सावरकर

''धर्मान्तरण अर्थात् राष्ट्रान्तर'' मे 'धर्म और धर्मान्तर' शब्दो की योजना किस अर्थ में की गयी है, इसका स्पष्टीकरण आवश्यक है। राष्ट्रान्तर धार्मिक सस्थाओ द्वारा किये धर्मान्तर का ही परिणाम होता है।

जन्म-जात जाति-भेद की प्रथा और जाति-बहिष्कार की राष्ट्रीय सजा

हिन्दुओ पर मुस्लिम आक्रमण प्रारम्भ होने के बहुत पहले से अर्थात् हिन्दुओ द्वारा हूणों का समूलोच्चाटन करने के पश्चात् से ही हिन्दुओं के सैकडो नेताओं ने एक बार फिर से हिन्दू समाज एव हिन्दू राष्ट्र की राजनीतिक, सामाजिक एव धार्मिक सुस्थिति लाने की दृष्टि से राष्ट्रीय स्तर पर एक बहुत बडा सर्वांगीण प्रयास प्रारम्भ किया था। तत्कालीन हिन्दू राष्ट्र का राजकीय नेतृत्व उस समय के उदयोन्मुख राजपूतो के प्रतापी राजघरानो को प्राप्त हुआ। उन पुनर्रचना के प्रयास मे विशाल हिन्दू समाज की व्यवस्था जाति भेद की चौखट में जमाकर बिठाई जा रही थी। धीरे-धीरे उस जाति भेद की प्रथा को ही 'जन्म-जात' जाति भेद का अपरिहार्य रूप प्राप्त हुआ। पहले के चार वर्णो में ही नहीं, तो उन चार वर्णो के पेट से निकले तथा अन्यान्य गौण जाति प्रवाहो की अभिवृद्धि होते-होते अन्त में सुदृढ रूप में तथा शास्त्र की अनुमति से यह हिन्दू जाति सामाजिक और धार्मिक दृष्टि से चार हजार अन्तर्गत जन्मजात जातियों में विभाजित हो गयी।

इस जन्म जात जाति भेद का यह मूल सूत्र था कि जो जिस जाति मे पैदा हुआ है, वह उसी जाति में रहेगा। बहुत सी जातियो में अन्य जातियों के साथ रोटी-पानी का व्यवहार भी दण्डनीय माना जाने लगा। उस काल में इन्हीं जाति सस्कारों के रूप मे 'धार्मिक आचरणों' को हुक्काबन्दी, पानीबन्दी (लोटाबन्दी), बेटी बन्दी, स्पर्शबन्दी, शुद्धिबन्दी, सिन्धुबन्दी आदि सात नाम दिये गये हैं। हिन्दुओ की प्रगति मे बाधा डालने वाली वे सात बन्दिया मानो सात बेडिया, विदेशी बेड़िया न कहकर सात स्वदेशी बेडिया कहना ही उचित है।

सर्वप्रथम इस बात का स्मरण करना चाहिए कि हिन्दू-समाज के विशाल संगठन एवं उसकी आश्चर्यजनक स्थिरता के लिए परिस्थितिवश और किन्हीं विषयो के कारण जाति भेद की इस प्रथा का प्रादुर्भाव हुआ होगा। अपना सामाजिक बीज रक्त-सकरता के कारण विकृत न हो जाये और जातीय जीवन एव परम्परा शुद्ध बनी रहे। इस दृष्टि से तत्कालीन धर्मावलम्बियों ने हिन्द राष्ट्र के हित के विचार से जन्मजात (जन्मना) जाति भेद का निर्माण किया या उसे स्वयं स्फूर्ति से निर्मित होने

दिया। हजारो वर्ष व्यतीत हो गये। हजारों संकट गुजर गये, परन्तु चाहे वे तथाकथित स्पृश्य हो गये हो, चाहे अस्पृश्य, कोटि-कोटि हिन्दुओ के मन पर इस जाति भेद सस्था ने अपना अमिट प्रभाव डालकर उसके प्रति उन्हें मोहासक्त कर लिया। परिणामस्वरूप परिया, भगी, धीवर, भील, वैश्य, जाट, क्षत्रिय, ब्राह्मण आदि हिन्दुओ की जातियो और उनकी हजारो उप- जातियो की श्रद्धानुसार, उनका यह एकनिष्ठ विश्वास उत्पन्न हुआ कि यह मर्यादित जाति-धर्म ही इहलौकिक कल्याण साधन कराने वाला, भगवान् का कृपा का सम्पादन कराने वाला और अपने-अपने कुल का पवित्र कराने वाला सदाचार है। यह विश्वास जाति भेद की जड-मूल सैकडो वर्ष के हिन्दू राष्ट्र के सर्वजातीय जीवन मे गहरे पैठे बिना उत्पन्न नही हो सकता। असख्य जाति समूहो के कारण विच्छिन्न दिखनेवाले राष्ट्र मे भीतर से किसी एकात्म स्वत्व की अदम्य भावना का स्फुरण था।

जाति बहिष्कार के दुष्परिणाम

रोटीबन्दी, बेटीबन्दी इत्यादि उस समय के जिन छुआछूत वाले मुख्य धर्माचरणो को आज 'सात स्वेदशी बेडिया' कहते हैं, वे उस काल मे हिन्दू धर्म पर मुस्लिम आक्रमण के समय हिन्दू समाज को जकडकर रखने वाली बेडिया नहीं, अपितु अपने राष्ट्र शरीर द्वारा अगीकृत रत्नजडित एव अभिमन्त्रित रक्षाबन्धन प्रतीत होती थीं। प्रत्येक जाति को, फिर चाहे वह ब्राह्मणो की हो अथवा भगियों की, अपनी जाति पर पूर्ण गर्व था।

हिन्दुओ की इन समस्त जातियो मे यदि किसी व्यक्ति द्वारा जाने या अनजाने में उपयुक्त जातीय आचरण भ्रष्ट हुआ, अगर किसी ने किसी दूसरी जाति के हाथ का पानी भी पी लिया, तो ऐसे जातीय धर्म के विपरीत आचरण करने वाले हिन्दू को जो कडी-से-कडी सजा दी जाती थी, वह थी 'जाति बहिष्कार' अर्थात् 'उसका हुक्का-पानी बन्द।'

जाति पंचायत अथवा शकराचार्य आदि धर्मपीठो द्वारा जिस हिन्दू को 'जातिबन्दी' का दण्ड मिलता था, वह फिर चाहे राजमुकुटधारी राजा ही क्यो न हो, थरथर कापने लगता था।

जातिभेद का यह कुठित अस्त्र मुसलमानो पर धार्मिक प्रत्याक्रमण करके उनका विनाश करने के कार्य मे तनिक भी उपयोगी नही हुआ। इतना ही नही, तो इस जाति भेद के धर्माचरण के कारण ही हिन्दू जाति और हिन्दू राष्ट्र पर धर्मान्तरण के सघर्ष मे घोर अनर्थकारी परम्पराये भी थोपी गयीं। जिसके कारण मुसलमानो के लिए कोटि-कोटि हिन्दुओ का धर्मान्तर करना सरल हो गया। इसके विपरीत इसी कारण मुसलमानों को हिन्दू बनाने का कार्य हिन्दुओ के लिए नितान्त असम्भव हो गया।

हिन्दुस्थान मे आने के पूर्व अरबादि के मुसलमानो ने ईरान, तूरान और मध्य एशिया के राष्ट्रो एव अफ्रीका के मिस्त्र (इजिप्त) देश से लगाकर यूरोप के स्पेन तक के राष्ट्रो के ईसाइयो, पारसियो आदि गैर मुस्लिम धर्म के लाखो अनुयायियों को भी तलवार के बल पर अत्याचार एव बलात्कार

पूर्वक मुसलमान बनाया था। परन्तु उन्होने कभी यह स्वीकार नहीं किया कि मुसलमानो के साथ रोटी का सम्बन्ध होने मात्र से वह भी उनके सहधर्मी हो गये और उनका मूलधर्म ईसाई, इजरायली अथवा अन्य धर्म नष्ट हो गया। सैकडो वर्षो तक उन पर मुस्लिम सत्ता का कठोर पहरा लगा रहा। परन्तु जिस किसी भी भूभाग से जैसे ही मुस्लिम सत्ता समाप्त होती, वैसे ही एक झटके के साथ वे राष्ट्र मुसलमानो का हरा झण्डा फेक कर अपने पूर्वजो का धर्म और उनका झण्डा फहरा देते थे। ऐसी दशा मे ईसाई और इजरायली आदि धर्मावलम्बियो को धर्मातरण के बाद मुसलमान बनाये रखना राज्य शक्ति के लिए अत्यन्त ही दुष्कर हो गया।

इसी प्रकार जब स्पेन, ग्रीस और सर्विया आदि देशो के मुसलमानो पर जबरदस्ती धर्मान्तरण करने का अवसर आया और उन्हे ईसाइयो ने कत्लेआम की धमकी देकर धर्मान्तरित किया, तो उन धर्मान्तरित मुसलमानों को ईसाई बनाये रखने के लिए उन ईसाई राजसत्ताओ को भी आवश्यकतानुसार सशस्त्र कडा पहरा रखना पडता था।

उपर्युक्त अनुभव के आधार पर ही अरब आदि के मुसलमान विजेता इस निष्कर्ष पर पहुचे थे कि बलपूर्वक मुसलमान बनाये गये हिन्दुओ को मुसलमान बनाये रखने के लिए कम-से-कम सौ दो सौ वर्षो तक तो सैन्य शक्ति के बल पर उन्हे मुसलमान धर्म मे पकडकर जबरदस्ती रखना ही पडेगा। परन्तु उनकी यह धारण मिथ्या सिद्ध हुई। मुसलमानो ने जब सिन्धु पर आक्रमण किया और अपने शस्त्रबल से हिन्दुओ को बलात् मुसलमान बनाना प्रारम्भ किया, तो उन्हे यह ज्ञात हुआ कि दुनिया के अन्य धर्मावलम्बियो की अपेक्षा अधिक धर्मिष्ठ ओर कट्टर होने के कारण हिन्दुओ को यद्यपि मन से मुसलमान बनाना कठिन हे, तो भी वे सरलतापूर्वक शरीर से मुसलमान बनाये जा सकते है।

इस्लाम धर्म के प्रादुर्भृत होने के पूर्व ईसवी सन् के प्रथम चार शतको मे मालाबार के हिन्द राजा की उदारता का दुरुपयोग कर उनके आश्रित सीरियन ईसाइयो ने भी जब हिन्दुओ का धर्मान्तरण करना प्रारम्भ किया, तो उन्हे भी यह विदित हुआ कि केवल रोटी का टुकडा या एक कौर भात उनके मुह मे ठूसकर उन्हे स्वधर्म से भ्रष्ट किया जा सकता है। जिस कुए से हिन्दू पानी पीते थे, उसमे जूठी डबल रोटी का टुकडा, बिस्कुट अथवा गोमास का टुकडा आदि पदार्थ डाल देने मात्र से उक्त कुए का पानी पीने वाले समस्त हिन्दू अन्न-जल- सहवास, सम्पर्क के कारण जीवन भर के लिए धर्मभ्रष्ट हो जाते थे। उन्हे और उनकी सन्तानो को फिर हिन्द धर्म मे लेने के लिए कोई भी तैयार नहीं होता था।

और जब पन्द्रहवी-सोलहवी शताब्दी मे पुर्तगीज आदि युरोपियन ईसाई अपनी सैन्य शक्ति के साथ समुद्री मार्ग से हिन्दुस्थान मे प्रविष्टि हुए, तो वे भी उपर्लिखित छुआछूत और धर्म का भोलापन देखकर बडे आनन्दित हुए। यह विचार कर वे फूले नहीं समाये कि ''इन मूर्ख हिन्दुओ के हिन्दुस्थान को देखते-देखते ईसाई बना डालेगे।''

भ्रष्टों के पैरों में शुद्धि बन्दी की बेड़ी

परकीय राष्ट्रो के सशस्त्र राजकीय आक्रमणो का प्रतिकार करने के लिए हिन्दुओ के शस्त्रागारो मे अमोघ शस्त्र पहले से ही तैयार रहते थे। शत्रु के साथ समरांगण में प्रत्यक्ष तलवार लडाकर हिन्दुओं ने उन राजकीय आक्रमणो का अनेक बार सफलतापूर्वक सामना किया था। परन्तु उस काल के हिन्दुओ के शस्त्रागारो मे परकीयो के इस धार्मिक आक्रमण को समाप्त करने वाली तलवार प्रारम्भ से ही नहीं थी। मुसलमानों के पजाब पहुचने तक धर्मभ्रष्ट हिन्दुओ की सख्या कई लाख हो गयी। उनमें से बहुतों की यह इच्छा थी कि वे हिन्दू धर्म मे पुन: वापस आ जायें। परन्तु हिन्दुओ के इस जाति बहिष्कार के कठोर विधान मे शुद्ध होकर हिन्दू धर्म अथवा समाज मे वापस आने का न तो कोई पर्याय था और न प्रायश्चित ही। हिन्दुओ ने धर्मभ्रष्टो को जाति बहिष्कार का दण्ड देकर हिन्दू राष्ट्र के पैरो पर कुल्हाडी मार दी।

परन्तु एक हिन्दू के भ्रष्ट होने का, उसके मुसलमान बनने का तात्पर्य था एक मानव का राक्षस बनना, एक देव का दैत्य हो जाना।

फिर भी हिन्दू समाज की आखे नहीं खुली, यदि साम्प्रदायिक दृष्टि से विचार करना हो, तो यह कहा जास कता है कि हिन्दुओ की शुद्धिबन्दी की धार्मिक रूढि के कारण मुसलमानो को यह विश्वास हो गया था कि जिसे उन्होने धर्मभ्रष्ट करके एक बार मुसलमान बना लिया, वह सदैव के लिए मुसलमान हो गया। अपनी शुद्धिबन्दी की रूढि के कारण उसे वे कभी भी हिन्दू नहीं बना सकते। इस कारण मुस्लिम धर्म की रक्षा करने की उन्हे चिन्ता ही नही रह गयी। जाति बदलने और धर्मान्तिरण करने के बीच का यह राष्ट्रघातक भेद सैकडो वर्ष तक हिन्दुओ के ध्यान मे ही नहीं आया।

यदि हिन्दू समाज का एक व्यक्ति अपने से छोटी समझी जाने वाली दूसरी जाति के साथ रोटी अथवा बेटी का व्यवहार कर लेता था, तो उसे उसकी जाति छोड देती थी। उसी प्रकार यदि किसी हिन्दू को इस नये विधर्मी एव मूलत: पतित माने जाने वाली म्लेच्छ जाति के साथ विवश होकर ही क्यो न हो रोटी-पानी का व्यवहार करना पड जाता, वह स्वय या पत्नी सहित बलात् धर्मभ्रष्ट कर दिया गया होता, तो उसे स्वय या अपनी पत्नी के साथ जीवन भर मुसलमानो का गुलाम बनकर रहना पडता था।

परन्तु जब इसी रूढि के अन्तर्गत मुसलमानो द्वारा भ्रष्ट किये गये किसी हिन्दू को 'शुद्धिबन्दी' की बेड़ियो से जकडकर जाति-बहिष्कार का दण्ड दिया जाता था, तो उसका हिन्दूपन छिन जाता था। मुसलमानो द्वारा बारम्बार किये गये धार्मिक आक्रमणो मे वे इसी प्रकार हजारो हिन्दुओ को धर्मभ्रष्ट करते जाते थे और हिन्दू समाज उन धर्मान्तरितो को हिन्दू जाति से बहिष्कृत करता जाता था। फलत: उन्हे बाध्य होकर मुसलमान धर्म और समाज मे रहना पडता था। इस प्रक्रिया के कारण

हिन्दू राष्ट्र का सख्याबल दिनो दिन क्षीण होता गया।

परन्तु धर्मभ्रष्ट हुए हिन्दुओ को, हिन्दू धर्म मे पुन: आने की इच्छा होने के बाद भी हिन्दू राज्यो मे मुसलमान बनकर ही रहना पडता था। इसका कारण था, शुद्धिबन्दी! और यह हिन्दू धर्म!!

जैसा कि मुस्लिम आक्रामक सैकडो हिन्दू स्त्रियो को भ्रष्ट कर हमारे स्त्री-समाज का सख्याबल भयानक रूप से कम कर रहे थे, उस सकट को वैसे ही प्रत्याक्रमण द्वारा नष्ट करने के लिए हिन्दुओ द्वारा किये गये साहसपूर्ण और प्रसगानुकूल प्रत्याघात भी मिलते है। यद्यपि इनकी सख्या पर्याप्त विरल है। उदाहरणार्थ मारवाड के राजा रायमल ने 600 मुस्लिम स्त्रियो को बलात् खींचकर उन्हे सामूहिक रूप से शुद्ध कराकर अपने विभिन्न सरदारो से उनका विवाह करवा दिया।

मेवाड के राणा कुम्भा ने भी मुसलमानो को परास्त कर उनकी अनेक स्त्रियो को अपने राज्य मे लाकर शुद्ध किया और उन्हे यथारुचि अपने राज्य के हिन्दू सरदारो से ब्याह दिया।

राजपूतो के रासो नामक इतिहास ग्रन्थो मे भी मुस्लिम स्त्रियो को फिरसे हिन्दू बनाकर, उनसे विवाह कर उनकी सन्तानों को हिन्दू समाज मे पचा लेने की घटनाये उल्लिखित है।

नेपाल के राजा जयस्थिति ने मुसलमानो के सशस्त्र धार्मिक आक्रमण का बदला लिया था। यह मेधातिथि की ही वृत्ति वाला अर्थात् विधर्मी दुष्टो का डक कुचल डालना चाहिए, इस मत का था। बगाल के नवाब शमशुद्दीन ने जब सन् 1360 के लगभग नेपाल पर चढाई की और सैकडो हिन्दू-बौद्ध मन्दिरो को ध्वस्त कर, हिन्दू-बौद्धो को तलवार के आतक से भ्रष्ट करके प्रलय-सा मचा दिया था, तब राज्याधिकार प्राप्त होते ही इस वीर राजा ने मुसलमानो से पाईपाई का बदला ले लिया था और उन्हे मार-मार कर नेपाल से भगा दिया। इतना ही नही, तो एक सच्चे हिन्दू व्रती राजा को शोभा देने योग्य मुसलमानो के द्वारा गिराये हुए सभी हिन्दू-बौद्ध मन्दिरो का जीर्णोद्धार कराया और सारे-के-सारे भ्रष्ट हिन्दुओ तथा बौद्धो की सामूहिक रूप से शुद्धि करवा ली।

मुस्लिम स्त्रियो को सामुदायिक रूप से हिन्दू बनाते समय पुरोहित उनके मस्तक पर जो अक्षत छिडकता है। बाद मे उन्हे गोबर मिला एक प्रकार का जल (अर्थात् पचगव्य) पिलाते है। फिर उन्हें व्यवहार योग्य मानकर अपनी रुचि अनुसार हिन्दू लोग उनसे विवाह कर लेते है।

अजमेर के अरुणदेवराय ने जिस समय मुसलमानो को हराकर उन्हे उस प्रदेश से बाहर खदेड दिया, तब उनके ससर्ग से अपवित्र हुई उस भूमि की शुद्धि के लिए उसने वहा पर एक विशाल यज्ञ का आयोजन किया। यज्ञ से पवित्र हुए उस स्थान पर उसने एक भव्य और विस्तीर्ण मन्दिर तथा अनासागर नामक एक सरोवर निर्मित कराया। आस-पास के जो हिन्दू स्त्री-पुरुष भ्रष्ट होकर मुसलमान बन गये थे, उन सभी को इस सरोवर मे स्नान कराकर शुद्धि किया गया। वहा पर एक स्थायी शास्त्र-व्यवस्था ही लागू कर दी गयी कि जो कोई भ्रष्ट हिन्दू सकल्प और सस्कार पूर्वक उस सरोवर मे स्नान करेगा, वह शुद्ध होकर फिर से हिन्दू-धर्म मे प्रवेश कर सकेगा।

जैसलमेर के महाराजा अमरसिह ने भी ऐसा ही एक विशाल यज्ञ कर अमरसागर नामक एक सरोवर बनवाया था।उस यज्ञ के प्रताप से इस पवित्र सरोवर मे—पहले सिन्धु प्रान्त में जो हजारों की सख्या मे हिन्दू स्त्री-पुरुष मुसलमान बनाये गये थे, उनके समुदाय के समुदाय—आकर सकल्पपूर्वक मन्त्र के साथ स्नान करते थे और फिर उन्हे हिन्दू-धर्म के अधिकारी पुरुषो द्वारा यह प्रमाणपत्र दिया जाता था कि वे अब शुद्ध होकर हिन्दू बन गये है।

इस विषय मे स्मृतिकार देवल ऋषि और भाष्यकार मेधातिथि के समान मुसलमानों के धार्मिक आक्रमण रोकने के लिए हिन्दुओ मे भी प्रत्याक्रमणकारी शक्तिसचारक तथा क्रान्तिकारी शास्त्राधार उत्पन्न करने वाले, मौका पडे तो शत्रु विनाश के लिए नया शस्त्र भी गढने वाले और प्रत्यक्ष शकराचार्य के पीठाधीश्वर होने का जिन्हे सौभाग्य प्राप्त हुआ—ऐसे विद्यारण्य स्वामी भी यहा यथाक्रम से उल्लेखनीय हैं। श्री विद्यारण्य स्वामी ने हिन्दू राष्ट्र के हितार्थ केवल धार्मिक शुद्धि की शास्त्रोक्त व्यवस्था ही नही बताई, अपितु मुसलमानों द्वारा बलपूर्वक भ्रष्ट किये गये हरिहर और बुक्क नामक दो तरुण वीरो का प्रकट रूप से शुद्धि सस्कार भी करवाया। और जब इन वीर-बन्धुओ ने अपने पराक्रम से तलवार के जोर पर मुसलमानो को अनेक लडाइयो में बार-बार हराकर सन् 1336 मे अपेक्षित हिन्दू राज्य स्थापित किया, तब स्वामी विद्यारण्य ने अपने हाथो शुद्धिकृत हरिहर का हिन्दू-सम्राट के रूप मे राज्याभिषेक भी किया।

इन्हीं विद्यारण्य माधव ने गोमन्तक में मुस्लिम राज्य सत्ता का उच्छेद कर धर्मभ्रष्ट हिन्दुओ को शुद्ध करने के लिए माधवतीर्थ नामक एक सरोवर बनवाया और धर्मभ्रष्ट किये गये हिन्दुओं को उसमे मन्त्रपूर्वक स्नान करवाकर उन्हे सामुदायिक रूप मे शुद्ध किया और इस प्रकार की शास्त्रीय व्यवस्था लागू कर दी, जिससे आगे भी इसी प्रकार का शुद्धिकरण चलता रहे।

श्री रामानुजाचार्य और उनके शिष्य श्री रामानन्द तथा बगाल के चैतन्य महाप्रभु आदि प्रभावी धार्मिक नेताओ ने भी म्लेच्छो द्वारा भ्रष्ट किये गये सैकडो हिन्दुओ को वैष्णव धर्म की दीक्षा देकर शुद्ध किया था।

यह तो विख्यात ही हैं कि हिन्दुओ का राज्य स्थापित करने वाले परमप्रतापी श्री छत्रपति शिवाजी महाराज ने बजाजी निम्बालकर और नेताजी पालकर को भ्रष्ट होकर मुसलमान हो जाने के उपरान्त शुद्ध कर फिर से हिन्दू बना लिया था।

जवाबी हमला इसे कहते हैं!

औरगजेब ने एक बार फैसला कर डालने के लिए चतुरगिणी सेना लेकर हिन्दू धर्म पर जो चढाई की थी, उस समय मराठो पर हमला करने के लिए वह प्रचण्ड सेना लेकर दक्षिण की ओर बढा। किन्तु, उसके उधर दक्षिण की ओर बढ जाने के पश्चात्, उसके अत्याचारों का बदला उसकी ही नीति के अनुसार निकालने के लिए तथा हिन्दुओ के अपमान और सख्याबल की हानि की भरपाई

करने के लिए उन पर जोधपुर रियासत के राठौरो ने धार्मिक प्रत्याक्रमण (जवाबी हमला) किया।

जोधपुर के प्रबल महाराणा जसवतसिह और वीर दुर्गादास राठौर के नेतृत्व मे, औरगजेब द्वारा मन्दिर को गिराकर खडी की गयी मस्जिदो को ही नही, तो सारी-की-सारी मस्जिदो को भी धाराशायी कर, उन स्थानो पर मन्दिर निर्मित किये गये। केवल भ्रष्ट किये गये हिन्दुओ को ही नहीं, तो रियासत के जितने अधिक हो सके, उतने मुसलमानो की सामुदायिक शुद्धि कर राठोरो ने उन्हे हिन्दू बना डाला। मुसलमानो की सैकडो स्त्रिया हिन्दू बनाकर राजपूतो से ब्याह दी गयी।

गोआ ब्राह्मण उन्हे गुप्तरीति से माडवी नदी के तट पर ले जाकर कहते है कि "तुम इसमे स्नान करो, इस मन्त्र का उच्चारण करो। इससे तुम ईसाई बनने के पाप से मुक्त हो जाओगे।"

ईसाई अत्याचार

सेट जेवियर जैसे पादरियो के सतत चिल्लाने बोखलाने से परेशान होकर पुर्तगाल के सम्राट् ने अपने शासकीय अधिकारियो को बडे कडे आदश भेजे—"यदि ईसाई धर्म प्रचारको के कार्य के प्रति जरा भी दुर्लक्ष्य किया, तो तुम्हारी सम्पूर्ण सम्पत्ति जब्त कर ली जायेगी।"

उत्तर भारत के सभी प्रान्तो के हिन्दू समाज को केवल मुसलमानो के ही धार्मिक सकट तथा अत्याचारो का सामना करना पडा है। किन्तु विन्ध्यपर्वत के दक्षिण मे रामेश्वर तक रहने वाले हिन्दुओ को लम्बे समय तक टिकी रहने वाली केवल पाच दक्षिणी मुस्लिम सल्तनतो के ही प्राण-घातक अत्याचारो को ही नही सहना पडा, बल्कि क्रूरता मे मुसलमानो से भी बढकर पुर्तगाली पादरियो के भी अत्याचार को सहना पडा है। भारत मे ईसाई धर्म-प्रचार के लिए पुर्तगालियो द्वारा मुसलमानो को भी लजाने वाले हिन्दुओ पर अत्याचार किये गये है। गोमान्तक मे पहले भ्रष्ट होकर ईसाई बने दस हजार से ऊपर हिन्दुओ को शुद्ध करने का महान् कार्य करने वाले श्री मसूरकर महाराज थे।

इन पुर्तगालियो के आगमन के बाद ईसाई राष्ट्रो से भी वैसा ही धर्मयुद्ध चलता रहा। इसी समय अरब और ईसाई राष्ट्रो ने दक्षिणी समुद्र पर अपनी सत्ता स्थापित कर इडोचीन तक विस्तार मे फैले हुए हिन्दू- बौद्ध साम्राज्य पर भी राजकीय और धार्मिक आक्रमण कर वहा के करोडो हिन्दुओ को धर्म भ्रष्ट कर दिया। इन अत्याचारी शत्रुओ ने उनके राज्य भी छीन लिये। इन कारणो से हिन्दुओ ने अपने पैरो मे समुद्रबन्दी की बेडी अपने हाथो डाली। समुद्र यात्रा बन्दी के कारण हिन्दू राष्ट्र की केवल राजसत्ता और धर्मसत्ता की ही हानि नही हुई, बल्कि हिन्दुओ की विशाल सामुद्रिक दृष्टि की भी हानि हुई। हिन्दुओ का समस्त व्यापार, उनका सम्पूर्ण नाविक दल नष्ट हो गया। नौका सचालन की कला ही नष्ट नहीं हुई, हिन्दूधर्म प्राय: अपनी ही गलतियो के कारण 'कूपमण्डूक' बना।

सच पूछा जाये, तो व्यक्तिगत और सामूहिक शुद्धि सम्बन्धी धार्मिक मोर्चे पर हिन्दुओ द्वारा मुसलमानो पर सशस्त्र जवाबी हमले का जो उपक्रम शकराचार्य के समान विद्यारण्य, छत्रपति

शिवाजी, दुर्गादास राठोर और जोधपुर के महाराज जसवतसिह आदि अन्य वीरो ने तथा रामानन्द, श्री चैतन्य आदि सत-महतो ने किया था, हिन्दू समाज को उसका नेतृत्व स्वीकार कर उसे सतत आगे चलाते रहना चाहिए था।

उस काल मे न केवल हिन्दुस्थान मे अपितु ससार के काफी बडे हिस्से मे मुसलमानों ने अपनी राजकीय एव धार्मिक सत्ता प्रस्थापित की थी। उन लोगो के सभी राष्ट्रो के इतिहास से यही बात सिद्ध होती हे कि जो बहुसख्यक राष्ट्र मुसलमानो की राजसत्ता और धर्मसत्ता दोनो को न उखाड़ फेक सके, वे तो जडमूल से नष्ट होकर मुसलमानमय ही हो गये। परन्तु कुछ अमुस्लिम राष्ट्रो ने मुसलमानो की राजसत्ता को उलट दिया।

मुस्लिमों द्वारा पादाक्रान्त स्पेन मुस्लिम विहीन कैसे हुआ?

जिस कालावधि मे हिन्दुस्थान पर मुसलमानो के आक्रमण हो रहे थे, उसी समय अरब-विजेताओं ने स्पेन देश को भी पादाक्रान्त कर वहा ओमियेड खलीफा के आधिपत्य मे एक प्रबल मुस्लिम राजसत्ता स्थापित की थी। अर्थात् यूरोप के अन्य हिस्सो के अनुसार स्पेन देश के ईसाइयों पर भी मुसलमानो के धार्मिक अत्याचारो का कहर टूट पडा था। असख्य ईसाई स्त्री-पुरुषो को भ्रष्ट किया गया अथवा मार डाला गया। आगे चलकर कुछ शताब्दियो बाद जब मुसलमान आपस मे ही लडने-भिडने लगे, तब यूरोप मे शक्तिशाली बन चले फ्रास के समान ईसाई राष्ट्र की सहायता और पोप के प्रबल प्रोत्साहन से, मुसलमानो के राजकीय और धार्मिक उत्पीडनो से त्रस्त स्पेन के ईसाइयो ने अपने एक पुराने राजवश के नेतृत्व में मुसलमानी राजसत्ता के विरुद्ध विद्रोह खडा किया। एक वर्ष की लडाई के बाद अन्त मे ईसवी सन् की पन्द्रहवी शताब्दी मे स्पेन के ईसाइयो ने मुसलमानी राजसत्ता पूरी-पूरी उखाड फेकी। और मुसलमानो द्वारा भ्रष्ट किये गये अपने असख्य ईसाई स्त्री-पुरुषो को 'बप्तिस्मा' देकर फिर से ईसाई धर्म मे लाने का कार्य राजकीय युद्ध मे विजयी बने स्पेनी लोगो के मन मे आन ही पूरा कर दिया। स्पेन की ईसाई राजसत्ता ने, ईसाई धर्मसत्ता ने और ईसाई जनता ने खुली प्रतिज्ञा की कि स्पेन मे अपने को मुसलमान कहलाने वाले किसी मनुष्य का अथवा मस्जिद कहलाने वाली किसी वस्तु का अब आगे अस्तित्व ही न रहने दिया जायेगा।

स्वतन्त्र स्पेन के शासन की ओर से एक अवधि निश्चित कर दी गयी कि उसके बीच राज्य के सारे मुसलमान या तो स्वयस्फूर्ति से ईसाई धर्म स्वीकार कर ले अथवा परिवार के साथ सदा के लिए देश से बाहर निकल जाये। उक्त अवधि के समाप्त होते ही स्पेन मुस्लिम विहीन हो गया अक्षैर वह स्पेन बना रह गया, मोरक्को नही बना।

पोलैण्ड, बल्गेरिया, सर्विया, यूनान आदि सभी ईसाई देशो मे मुसलमानो की ऐसी ही दुर्दशा हुई और इन देशो के नागरिको ने मुसलमानी राज्य और धर्म के नीचे दबे हुए अपने देश को स्वतन्त्र कर मुस्लिम विहीन कर लिया। ❑❑

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के अधिकारी एवं अंतरंग सदस्य—वर्ष 2006

अधिकारी

1	श्री गुरुदत्त तिवारी जी	संरक्षक
2	श्री सोमदत्त महाजन जी	संरक्षक
3	श्री रामनाथ सहगल जी	प्रधान
4	श्री हरबस लाल कोहली जी	कार्यकर्ता प्रधान
5	श्रीमती सावित्री चौधरी जी	उपप्रधान
6	श्री चन्द्रभान चौधरी जी	उपप्रधान
7	श्री विजय गुप्त जी	उपप्रधान
8	श्री राजीव भाटिया जी	महामन्त्री
9	श्री सुरेन्द्र गुप्ता जी	मन्त्री
10	श्री अजय सहगल जी	मन्त्री
11	श्रीमती कृष्णा सेठी जी	मन्त्री
12	श्री नरेन्द्र मोहन वलेचा जी	कोषाध्यक्ष

अंतरंग सदस्य

1	प्रो सारस्वत मोहन मनीषी जी	सदस्य
2	श्री जगदीश नाथ भाटिया जी	सदस्य
3	श्री सोमनाथ कपूर जी	सदस्य
4	श्री के सी नन्दवानी जी	सदस्य
5	श्री रामचन्द्र कपूर जी	सदस्य
6	श्री कीर्ति शर्मा जी	सदस्य
7	कैप्टन प्रेम कुमार वलेचा जी	सदस्य
8	श्री गंगाशरण शर्मा जी	सदस्य
9	श्री नवनीत गुप्ता जी	सदस्य
10	श्री प्रेमपाल शास्त्री जी	सदस्य
11	श्री करण सिह तवर जी	सदस्य
12	श्री दीनानाथ छाबडा जी	सदस्य
13	श्री योगेश कुमार आर्य जी	सदस्य
14	श्री धर्मपाल गुप्ता जी	सदस्य
15	श्री भूदेव आर्य जी	सदस्य

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के कर्मचारी—वर्ष 2006-07

1	श्री बनवारी लाल	कार्यालय लिपिक
2	श्री शेखर आर्य जी	प्रचारक
3	श्री बलवीर सिंह जी	प्रचारक
4	श्री मटरु लाल जी	प्रचारक
5	श्री रामवरन जी	प्रचारक
6	श्री कमल सिंह जी	प्रचारक
7	बिजेन्द्र पाल सिह जी	प्रचारक
8	श्री प्रणव मिश्रा जी	प्रचारक
9	श्री आसाराम जी	प्रचारक
10	श्री राजेश कुमार सक्सेना जी	प्रचारक
11	आ रघुवर शास्त्री	प्रचारक
12	श्री नारायण शास्त्री	प्रचारक

अध्याय-8

हिन्दुत्व की वीर भुजा

—रामधारी सिह दिनकर

आक्रामकता की ओर

राजा राममोहन राय और रानाडे ने हिन्दुत्व के पहले मोर्चे पर लडाई लडी थी, वह रक्षा या बचाव का मोर्चा था। स्वामी दयानन्द ने आक्रामकता का थोडा बहुत श्रीगणेश कर दिया, क्योकि वास्तविक रक्षा का उपाय तो आक्रमण की ही नीति है। सत्यार्थ प्रकाश मे जहा हिन्दुत्व के वैदिक रूप का गहन आख्यान है, वहा उसमे ईसाइयत और इस्लाम की आलोचना पर भी अलग-अलग दो समुल्लास हैं। अब तक हिन्दुत्व की निन्दा करने वाले लोग निश्चिन्त थे कि हिन्द अपना सुधार भले करता हो, किन्तु बदले मे हमारी निन्दा करने का उसे साहस नहीं होगा। किन्तु इस मेधावी एव योद्धा सन्यासी ने उनकी आशा पर पानी फेर दिया। यही नहीं, प्रत्युत, जो बात राममोहन, केशवचन्द्र और रानाडे के ध्यान मे भी नहीं आयी थी, उस बात को लेकर स्वामी दयानन्द के शिष्य आगे बढे और उन्होने घोषणा की कि धर्मचयुत हिन्दू प्रत्येक अवस्था में अपने धर्म मे वापस आ सकता है एव अहिन्दू भी यदि चाहे, तो हिन्दू धर्म मे प्रवेश पा सकते हैं। यह केवल सुधार की वाणी नहीं थी, जाग्रत हिन्दुत्व का समर-नाद था। और सत्य ही, रणारूढ हिन्दुत्व के जैसे निर्भीक नेता स्वामी दयानन्द हुए, वैसा और कोई नहीं हुआ।

सच पूछिये, तो स्वामी जी केवल इस्लाम के ही आलोचक नही थे, वे ईसाइयत और हिन्दुत्व के भी अत्यन्त कडे आलोचक हुए हे। सत्यार्थ प्रकाश के त्रयोदश समुल्लास मे ईसाई मत की आलोचना हे और चतुर्दश समुल्लास मे इस्लाम की। किन्तु ग्यारहवे और बारहवे समुल्लायो में तो केवल हिन्दुत्व के ही विभिन्न अगो की बखिया उधेडी गयी है और कबीर, दादू तथा चार्वाक एव जैनो और हिन्दुओ के अनेक पूज्य पौराणिक देवताओ मे से एक भी बेदाग नहीं छूटा है। वल्लभाचार्य और कबीर पर तो स्वामी जी इतना बसरे हैं कि उनकी आलोचना पढकर सहनशील लोगो की भी धीरता छूट जाती है। किन्तु यह सब अवश्यम्भावी था। यूरोप के बुद्धिवाद ने भारतवर्ष को इस प्रकार झकझोर डाला था कि हिन्दुत्व के बुद्धि सम्मत रूप को आगे लाये बिना कोई भी सुधारक भारतीय सस्कृति की रक्षा नहीं कर सकता था। स्वामी जी ने बुद्धिवाद की कमोटी बनायी और उसे हिन्दुत्व, इस्लाम और ईसाइयत पर निश्छल भाव से लागू कर दिया। परिणाम यह हुआ कि पौराणिक हिन्दुत्व तो इस कसौटी पर खण्ड-खण्ड हो ही गया, इस्लाम और ईसाइयत की भी सैकडो कमजोरिया लोगो के सामने आ गयी।

स्वामी जी का कहना था कि यद्यपि मै आर्यावर्त देश मे उत्पन्न हुआ और बसता हू, तथापि जैसे इस देश के मत-मतान्तरो की झूठी बातो का पक्षपात न करके यथातथ्य प्रकाश करता हू, वैसे ही दूसरे देशम्थ या मनोन्नति वालो के साथ भी बरतता हू। जैसा स्वदेश वालो के साथ मनुष्योन्नति के विषय मे बरतता हू, वैसा विदेशियो के साथ भी तथा सब सज्जनो से भी बरतना योग्य है।